RNI:UPHIN/2016/46009
RNP/SHN/18-2019-21

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ
ब्रह्मज्ञान ही अमृत है।
सरसावा

तारतम मंजरी

वर्ष ५ अंक २ फरवरी २०२० बुद्धजी शाका ३४१ विक्रम सवंत २०७६ पृष्ठ संख्या ३२

ब्रह्मज्ञान ही अमृत है

प्रेम ही जीवन है

आध्यात्मिक उन्नति के आठ सूत्र

१. नियमित ध्यान
२. नियमित स्वाध्याय
३. सात्विक अल्पाहार
४. प्रबल पुरुषार्थ
५. परब्रह्म के प्रति समर्पण एवं गुरुजनों के कथनों के प्रति श्रद्धा
६. शिष्टाचार
७. दृढ़ संकल्प
८. अटूट आत्मविश्वास

स्वत्वाधिकारी

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ

नकुड रोड, सरसावा, जिला-सहारनपुर, उ.प्र.

Email : shriprannathgyanpeeth@ gmail.com **Youtube**: SPJIN **Website**: www. spjin.org

Twitter : @Raajan Swami **Whats App**: +917533876060

अनुक्रमणिका

1.	सम्पादकीय – मृत्यु–वृद्धावस्था–रोग वरदान है		1
2.	बीतक समीक्षा – 6 : पाप की कमाई		2
3.	भटकाव और हम	राहुल श्रीमाली	5
4.	वास्तविक धर्म क्या है	गीता ठाकुर	7
5.	आत्मचिंतन – 3	दीप्ति	11
6.	प्रेम पाश में श्री राजजी को बांधना	अवधेश कुमार मिश्रा	14
7.	पारब्रह्म की दिव्य लीलाएं	राजबाला	16
8.	अन्तःकरण की निर्मलता	निलेश गर्ग	22
9	चिन्तन का विषय	शालिनी	24
10.	प्रेरणादायक प्रसंग	—	26
11.	परमधाम की ब्रह्मसृष्टि की पहचान	रामेश्वर निजानन्दी	29

आवश्यक सूचना

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा, श्री प्राणनाथ ज्ञान केन्द्र, पन्ना एवं श्री प्राणनाथ ज्ञान केन्द्र, वड़ोदरा के लिए विशेष रूप से फोन नम्बर संचालित किया गया है। सभी सुन्दरसाथ से निवेदन है कि सरसावा, पन्ना, वड़ोदरा कार्यलय में सम्पर्क करने हेतु निम्नलिखित नम्बरों पर ही सम्पर्क करें :

सरसावा – 7088120381
पन्ना – 7088120382
वड़ोदरा – 7088120383

सदस्यता शुल्क

भारत में	विदेश में
वार्षिक 130 रू.	650 रू.
आजीवन 1200 रू.	.....

लेख में प्रगट किये गये विचार लेखक के व्यक्तिगत विचार हैं इनके प्रति सम्पादक, प्रकाशक उत्तरदायी नहीं है।
किसी भी विवाद की स्थिति में न्यायक्षेत्र सहारनपुर होगा।

प्रकाशन कार्यालय
श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा, नकुड़ रोड, जिला–सहारनपुर (उ.प्र.)
पिन कोड–247232
सम्पर्क सूत्र–8650851010

Youtube:SPJIN
वेबसाईट :– www.spjin.org
ई मेल :– shriprannathgyanpeeth@gmail.co

सम्पादकीय

मृत्यु–वृद्धावस्था–रोग वरदान है

– राजन स्वामी

सामान्यतः मनुष्य तीन चीजों से डरता है– मृत्यु, वृद्धावस्था और रोग। कभी–कभी तो वह इसके लिये परमात्मा को भी दोष देने लगता है। लेकिन याद रखिये, जिस दिन यह तीनों चीजें समाप्त हो जायेंगी, इस पृथ्वी पर शायद ही कोई आस्तिक बचेगा। मृत्यु बड़े–से–बड़े नास्तिक को भी कंपा देती है परन्तु यदि हमने परम तत्व को जान लिया तो हम शाश्वत ब्रहमानंद प्राप्त हो सकेगा। हमारी चेतना ;जीवद्ध प्रकाशमय शरीर धारण कर ब्रह्मानंद में विहार करेगी। यदि हमने बह्म का साक्षत्कार नहीं किया तो हमें पुनः परमात्मा के साक्षत्कार का अवसर प्राप्त होगा। अतः मृत्यु न केवल नये जीवन का बल्कि अखण्ड ब्रह्मानंद में डूबने का संकेत है। सच्चे योगी इस शरीर को बंधन मानते हैं और मृत्यु की प्रतीक्षा करते हैं क्योंकि इससे ही असीम और शाश्वत आनन्द की प्राप्ति होती है। इसके विपरीत अज्ञानी व्यक्ति मृत्यु का नाम सुनते ही भयभीत हो जाता है क्योंकि उसे शरीर और संसार से मोह हो जाता है लेकिन जिसे ब्रह्मज्ञान का प्रकाश मिल जाता है वह कभी भी मौत से नहीं डरता।

इसी प्रकार, शरीर में जब कोई विकृति उत्पन्न हो जाती है तो वह रोग का रूप धारण कर लेती है। इसी प्रकारवृद्धावस्था हमें संकेत देती है कि हमें इस मिट्टी के शरीर का आकर्षण छोड़ कर अपनी आत्मा और उसके अखण्ड प्रियतम के सौन्दर्य को देखना चाहिये। अतः यह कहा जा सकता है कि हमारे लिये वृद्धावस्था, मृत्यु, रोग वरदान है।

प्रस्तुति

कृष्ण कुमार कालड़ा

बीतक समीक्षा - ६

प्रस्तुति एवं प्रलेखन

कृष्ण कुमार कालड़ा, जयपुर

'तारतम मंजरी' के सितम्बर 2019 अंक से हमने पूज्य ***श्री राजन स्वामी*** *जी द्वारा वर्ष 2018 में श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा में की गई बीतक चर्चा पर आधारित लेखों की एक श्रृंखला प्रारभ की है। इसमें प्रत्येक अंक में एक विशेष प्रसंग/घटनाक्रम का संक्षिप्त उल्लेख कर यह स्पष्ट करने का प्रयास किया जायेगा कि यह हमारे लिये क्यों महत्वपूर्ण है तथा इससे हमें क्या शिक्षा लेनी चाहिये। आशा है, पाठकों को यह श्रृंखला रुचिकर व उपयोगी लगेगी। आपके सुझाव सादर आमंत्रित हैं।*

– संपादक

अरब की लीला

पाप की कमाई

वि.स. 1703 में श्री मिहिरराज सदगुरू धनी श्री देवचन्द्र के आदेश से अरब जाते हैं। अरब में गांगजी भाई के छोटे भाई खेता भाई रहते थे जो अति धनवान थे। दरअसल, गांगजी भाई के निवास पर सदगुरू महाराज द्वारा होने वाली चर्चा में सुन्दरसाथ की सेवा पर काफी धन व्यय होता था जिसका सम्पूर्ण भार गांगजी भाई पर ही था। अतः यह विचार कर कि यदि खेता भाई का कुछ धन यहाँ आ जाता है तो आर्थिक बोझ कम हो जायेगा, श्री मिहिरराज सदगुरू महाराज के आदेश को शिरोधार्य कर अरब की यात्रा पर प्रस्थान करते हैं और नाव से चालीस दिन की यात्रा के पश्चात वहाँ पहुँचते हैं। श्री मिहिरराज से मिलकर खेता भाई बहुत प्रसन्न हुए और उन्होनें श्री मिहिरराज को अपने व्यवसाय का कुछ कार्यभार भी सौंप दिया। इस बीच श्री मिहिरराज ने खेता भाई को तारतम ज्ञान भी दिया तथा प्रार्थना कि वे अब सदगुरू महाराज के

चरणों में नवतनपुरी चलें जहाँ उनको आत्मिक शान्ति मिल सके। परन्तु खेता भाई पर इन सब बातों का कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा।

दुर्भाग्यवश खेता भाई का निधन हो जाता है तथा उनकी सम्पूर्ण धन–सम्पति पर वहाँ के बादशाह का एक हाकिम शेख सल्लाह अधिकार कर लेता है। दरअसल, शेख सल्लाह एक कट्टरपंथी मुस्लिम था तथा उसको यह सहन नहीं था कि कोई गैर–मुस्लिम उसके देश से अपनी सम्पति हिन्दुस्तान ले जाये। तत्पश्चात श्री मिहिरराज मस्कत जाकर बादशाह से उसकी शिकायत करते हैं तथा शेख सल्लाह को हड़पी हुई सारी धन–सम्पति श्री मिहिरराज को लौटाने का आदेश देते हैं। परन्तु शेख सल्लाह के मन से पाप नहीं गया तथा उसने सारे गोदामों में आग लगवा दी, जिससे सबकुछ जल कर राख हो गया।

खेता भाई के निधन का समाचार सुनकर सदगुरू महाराज बिहारी जी और श्याम जी को श्री मिहिरराज की सहायता के लिये अरब भेजते हैं। यद्यपि श्री मिहिरराज ने उन्हें खेता भाई की सम्पूर्ण सम्पति का लेखा–जोखा सौंप दिया परन्तु उनके मन में पाप भरा था। जब वे दोनों सारी सम्पति लेकर वापस नवतनपुरी लौटते हैं तो उसे छिपा देते हैं तथा श्री मिहिरराज पर दोष लगा देते हैं कि उन्होनें उन्हें कुछ भी नहीं दिया। जब सदगुरू महाराज तथा गांगजी भाई को उनकी बातों पर विश्वास नहीं हुआ तो उन्होनें अपनी बुआ बालबाई को उकसा कर जाम राजा को शिकायत करवा दी कि श्री मिहिरराज उनके भाई का धन हड़प कर अरब से लौट रहें हैं जो उनसे जब्त कर या तो गांगजी भाई को सौप दिया जाये या राजकोष में जमा कर दिया जाय। अतः जैसे ही श्री मिहिरराज नवतनपुरी पहुँचे, राजा के सैनिको ने जो कुछ शेष धन उनके पास था, उसे सरकारी खजाने में जमा कर लिया।

यद्यपि बाद में श्री मिहिरराज को दोषमुक्त कर छोड़ दिया गया परन्तु खेता भाई की सम्पूर्ण सम्पति का एक भी अंश धर्म और सुन्दरसाथ के काम नहीं आ सका। आखिर ऐसा क्यों हुआ? क्योंकि वो कमाई पाप की थी। वास्तव में खेता भाई ने अरब में जो भी धन कमाया था वो ईमानदारी से नहीं कमाया था। याद रखिये, धर्मपूर्वक कमाया जाने वाला धन अर्थ कहलाता है तथा जो अधर्म से कमाया जाता है वह अनर्थ कहलाता है जो दो पीढ़ियों के पश्चात नहीं रहता। पाप से लक्ष्मी घटे, कहे संत कबीर। हमारे देश में यदि इस बात पर गंभीरतापूर्वक मनन किया जाय तो यहाँ भ्रष्टाचार पूर्णरूप से समाप्त हो सकता है। अन्याय पूर्वक किसी का धन लूटकर कोई भी व्यक्ति धनवान नहीं हो सकता। केवल धर्मपूर्वक कमाया हुआ धन ही आपके पास टिका रहेगा अन्यथा आपकी संतान ही उसे बर्बाद कर देगी। याद रखिये लक्ष्मी कभी भी एक स्थान पर नहीं रहती और वह वहीं रहेगी जहाँ धर्म होगा। हम लोग दीपावली को लक्ष्मी की पूजा तो अवश्य करते हैं परन्तु उन गुणों पर नहीं चलते जिससे लक्ष्मी हमारे पास आये। विदेश में लोग लक्ष्मी की पूजा नहीं करते परन्तु वे परिश्रम करते है तथा बहादुरी दिखाते हैं, इसलिये वे धनवान होते हैं। कोई भी अकर्मण्यता या अंधविश्वास आपको धनवान नहीं बना सकता, केवल आपका पुरूषार्थ ही आपको धनवान बनायेगा। यदि आप धर्मानुकूल आचरण

करेगें तो अर्थ तो आपके पीछे–पीछे चलेगा।

उल्लेखनीय है कि प्राचीन काल में भारत सोने की चिड़िया कहलाता था। यहाँ इतना अधिक सोना–चाँदी था कि जिसे लूटने के लिये इस पर अनेक आक्रमण भी हुए। इसका प्रमुख कारण यह था कि उस समय यहाँ भ्रष्टाचार व अन्याय नहीं था। लोग धर्मपूर्वक आचरण करते थे तथा दूसरे के धन को मिट्टी के समान समझते थे। आज की परिस्थिति में भी यदि यहाँ ऐसा हो जाय तो हमारा देश पुनः सोने की चिड़िया बन सकता है तथा राम राज की तरह यहाँ कोई भी निर्धन नहीं रहेगा। याद रखिये, जिस देश मे लोग अपराध और मांसाहार बंद कर दें तथा ईमानदारी और परिश्रम से कमाने लगे तो वहाँ किसी के भी गरीब होने का प्रश्न ही नहीं उठता और चारों ओर खुशहाली का साम्राज्य होगा। याद रखिये, किसी भी देश में सम्पन्नता तब तक नहीं आ सकती जब तक वहाँ के लोगों को नैतिकता का पाठ नहीं पढ़ाया जाय। सृष्टि को धारण करने वाला धर्म है तथा धर्म के जो लक्षण है उनको आचरण में लाये बिना कोई भी समाज सुखी तथा वैभवशाली नहीं बन सकता।

अतः बीतक के इस घटनाक्रम से हमें यही शिक्षा मिलती है कि हम सदैव धर्मानुकूल तथा नैतिकता से परिश्रम तथा पुरूषार्थ कर धन कमाये अन्यथा यह धन हमारे लिये किसी काम नहीं आयेगा और दुख का कारण बनेगा।

लेखकों के लिए आवश्यक सूचना

सुन्दरसाथ के चरणों में विनम्र प्रार्थना है कि जो भी सुन्दरसाथ लिखने में कुशल,योग्य है। जो अपना भाव तारतम वाणी और शास्त्रों के माध्यम से दूसरों तक पहुंचाना चाहते हैं ऐसे सुन्दरसाथ अपना लेख ईमेल (E-mail) या वटसप (watsapp) के माध्यम से ज्ञानपीठ में भेजें। लेख भेजने की अन्तिम तीथि प्रत्येक महिने की 1 तारिख तक रहेगी। समय पर भेजे गये लेखों को ही उस महिने की पत्रिका में प्रकाशित किया जायेगा।अन्यथा आगे आनेवाली महिनों में प्रकाशित की जायेगी।

लेख भेजने का नियम–
1–शुद्ध टाईप होनी चाहिए।
2–हस्तलिखित शुद्ध एवं स्पष्ट होना चाहिए।
3–टाईप किया गया लेख हो तो ओरजिनल कांपी होनी चाहिए।
4–डाक से ज्ञानपीठ के पते भर भेज सकते हैं।
5–हस्तलिखित लेख को PDF बनाकर ही भेजें, ताकि पढने में और टाईपिंग में असुविधा न हो।

तारतम मंजरी मासिक पत्रिका "लेख" प्रेषित हेतु एवं अन्य कोई भी असुविधा के लियें निम्नलिखित EMAIL और दूरभाष नम्बरों पर सम्पर्क करें।

tartammanjari@gmail.com

+9193141 93262 (जुनेजा बाबूजी)
+919725389547 (आचार्य सुभाष जी)

भटकाव और हम

राहुल श्रीमाली, झालोद, दाहोद, गुजरात

जो लिख रहा हूं उसका शिकार खुद हो चुका हूं, और उसी अनुभव के आधार पर जो दिल के पटल पर उभर रहा है वह लिख रहा हूँ। समय के प्रवाह में जब समाज सैद्धांतिक पक्ष को छोड़ देता है या ज्ञान और प्रेम से परिपूर्ण उत्तम नेतृत्व की छत्रछाया खो देता है तब समाज धीरे धीरे पता भी न चले उस गति से गलत दिशा की और बढ़ने लगता है और नया जुड़ने वाला जनमानस उसी गलत दिशा और रीति को समाज का अभिन्न अंग मानते हुए उसी को सैद्धांतिक पक्ष समझ लेता है... जबकि वह मात्र भटकाव होता है . इसी दौर से हमारा निजानंदप्रणामी समाज भी गुजर रहा है आगे भी गुजर चुका है. जहां तक मेरी समझ में आता है कोई भक्त या सुन्दरसाथ अपनी आत्म जागृति की राह में मुख्यतः तीन भटकाव का शिकार होता है.

1. सामूहिक भटकाव

जब समाज उत्तम नेतृत्व की छत्रछाया खो देता है, और ज्ञानमार्ग से विमुख होने लगता है तब अनगिनत परम्पराएं समाज की रीति के नाम पर शुरू हो जाती हैं और समाज भटकाव की ओर चल पड़ता है। जैसे कि अति प्रिय महाराज छत्रसाल जी के समय तक कहीं भी लिखित में नहीं है कि तारतम को मंत्र के रूप में कान में फूंक मारकर दिया जाता था. जितने भी कवि या महानुभाव श्री छत्रसाल जी के दरबार में आए उन सबको तारतम ज्ञान दिया गया न कि कान में फूंक मारी गई। उस वक्त तो छत्रसाल जी के हाथ में बागडोर थी तो क्या कहीं किसी के पास प्रमाण है कि छत्रसाल जी ने किसी के कान में फूंक मारी हो ?श्री छत्रसाल जी के पर्दे में होने के बाद ज्ञानमार्ग की अस्थिरता के कारण सबको जगाने के लिए ब्रह्मवाणी की आड़ में जो परंपराएं पनपी वह वाणी के किसी भी सैद्धांतिक पक्ष को प्रमाणित नहीं करती थी जैसे कि ऊपर कहा, कान में फूंक मारना, मालाएं जपना, दीक्षा देना, महिलाओं को ब्रह्मवाणी छूने न देना. वगैरह। यही भटकाव समय रहते हमारे समाज का अभिन्न अंग बन गया और हम सभी इस भटकाव को गुरु का आदेश या समाज के ब्रह्मवाणी के नियम मानकर सामूहिक रूप से इनका शिकार होते रहे. ऐसे कई उदाहरण हैं जिनके कारण समाज सामूहिक रूप से भटकाव का शिकार हुआ है और आज तक हो रहा है, सुन्दरसाथ भी नहीं सोच रहा कि एकबार ब्रह्मवाणी में भी देख लें हम की क्या वाकई में ये परम्पराएं कहीं लिखी गई हैं ?

2. व्यक्तिगत भटकाव

आज लगभग हर एक सुन्दरसाथ के घर में ब्रह्मवाणी है, और हमारे सभी स्थानों से छपा हुआ साहित्य भी हमारे घरों में अलमारी में बंद पड़ा हुआ है. हमारी हालत यह है कि हम दवाई अलमारी में बंद करके रोग को खुद बढ़ा रहे हैं. न हम ब्रह्मवाणी का सही चिंतन कर रहे हैं न साहित्य विवेचनात्मक स्तर पर पढ़ रहे हैं। हमने ब्रह्मवाणी को सिर्फ सुख दुख निवारण का माध्यम बना दिया है और इसीलिए तो पूजा करते हैं कि हमारा यह कार्य हो जाए. हमारे घर में ब्रह्मवाणी, बीतक, बड़ीवृत सब है उसमें रहनी और चितवनि की उत्तम राह भी है पर उससे न जुड़ने के कारण ही हमें सोने के सिंहासन, भागवत के बड़े पंडाल, समूह लग्न के नाम पर होने वाले सामाजिक कार्य जागनी कार्य लगते हैं. पहले ब्रह्मवाणी छूने को, देखने को नहीं मिलती थी आज ब्रह्मवाणी हमारे घर में है तो हमें यही पता नहीं है कि अब आगे क्या करना है !!

3. आधुनिक भटकाव

इस दौर ने समाज की सबसे बड़ी दुर्दशा की है, आज हमारे स्थान आधुनिक बन गए हैं कैमरे लगा कर महाराज का जन्मदिन मनाया जा रहा है, हर तरफ सोना सजाया जा रहा है, सोने के जरिए सुन्दरसाथ को आकर्षित करने का टोटका किया जा रहा है, पैसे उड़ाए जा रहे हैं, फोटो को केक खिलाया जा रहा है, भागवत कथा को जागनी कार्य कहा जा रहा है, स्वागत में कोमल फूलों को कुचला जा रहा है, कोई किसी को भाई बना रहा है तो कोई किसीको बहन बना रहा है, ब्रह्मवाणी की आड़ में त्योहारों की नौटंकिया की जा रही हैं, स्टेज पर से मार्फत का ज्ञान देने वाले राखी के धागों से महीनों छूट नहीं पा रहे हैं, फोन पे दो दो घण्टे न जाने किनकी जागनी का दावा ठोका जा रहा है, कहीं नेतृत्व ले बैठे सुन्दरसाथ को दौड़ाते हैं तो कहीं महाराज खुद शुरू हो जाते हैं. जहां 1 से 15 एमबी में पूरी वाणी टीका सहित फोन में आ जाती है उस समय में भाव के नाम पर 170 किलो की ब्रह्मवाणी अर्पित की जा रही है. चर्चनी और चितवनि की धर्मधरा पर 905 साड़ियों की चुनरी किसी माताजी के मंदिर की देखादेखी चढ़ाई जाती है, पाठ के नाम पर चालीसा की और मोड़ा जा रहा है. और न जाने क्या क्या चल रहा है...

सुन्दरसाथ जी ऊपर कहे गए हर एक श्य हमने हमारी आत्म जागृति की राह में देखे हैं और यही श्य सबसे बड़े अवरोध हैं, यही श्य हमे भटकाते हैं कि जिससे हम भी इसी प्रवाह में शामिल हो जाएं. इस आखिरी दौर में अगर आज भी हम ब्रह्मवाणी के वचनों से नहीं जुड़ेंगे, वाणी मंथन, चर्चनी और चितवनि की राह पर नहीं मुड़ेंगे तो 350 सालों से शुरू हुई यह भटकाव रूपी परम्पराएं कभी भी हमे धामधनी के नजदीक नहीं जाने देंगी. हमे इन सबसे मुहं फेरकर ब्रह्मवाणी में डूबना ही होगा तभी जागनी लीला की सुगंध हमारे दिल मे समाहित हो पाएगी अन्यथा चांदी सोने और बड़े बड़े स्थानों की चमक में ही हम इस बाकी कुछ बचे समय को गवां देंगे. फिर तो ताए निर्फल गई जो रात वाला चरण ही हमारे लिए सार्थक होगा।

वास्तविक धर्म क्या है

गीता ठाकुर, जयपुर

वेद शास्त्रों में धर्म का अर्थ वेदों में उपदेश किए शुभ कर्म हैं, वहां धर्म का अर्थ मजहब नहीं है। मनुस्मृति श्लोक 2.6 का प्रमाण देखें–

(अखिल वेद) सम्पूर्ण वेद (धर्ममूलं) धर्म के मूल हैं। इसका अर्थ है कि वेदों से ही धर्म अर्थात् कर्ततव्य–कर्म उतपन्न हुए हैं। आम भाषा में भी हम कहते हैं देश की रक्षा करना, माता–पिता, गुरू इत्यादि की सेवा करना हमारा धर्म है। इस धर्म शब्द का अर्थ वास्तव में वेदोक्त कर्ततव्य कर्म करना ही कहा है।

इसी प्रकार श्रीष्ण महाराज ने भगवद्गीता श्लोक 3.15 में कहा कि हे अर्जुन! कर्म को वेद से उत्पन्न हुआ जान और वेद अविनाशी परमात्मा से उत्पन्न हुए हैं।

आज आश्चर्य यही है कि हम श्री भगवद्गीता के भी इस श्लोक अथवा अनेक श्लोकों में जो ईश्वर से उत्पन्न वेदों का ज्ञान है उसे अनदेखा कर रहे हैं और केवल आचरण रहित गीता आदि का पाठ भर करते हैं, जो कभी भी लाभदायक नहीं हो सकता। तैत्तिरियोपनिषद् में वेद विद्या पढ़ा चुकने के बाद आचार्य अपने शिष्य को शिक्षा देता है कि – ''सत्यं वद। धर्मम् चर'' सत्य बोलना और धर्म का आचरण करना। यहां भी धर्म शब्द का अर्थ वेद के ज्ञाता विद्वान् आचार्य द्वारा शिष्य को गुरूकुल में वेदों में उपदेश किए हुए शुभ कर्मों को आचरण में लाना कहा है।

धर्म के विषय में महर्षि व्यासमुनि जी ने महाभारत के वनपर्व में यह उपदेश किया – '' धर्मस्य तत्त्वं निहितं गुहायां'' धर्म का तत्त्व हृदय गुहा में निहित अर्थात् अत्यन्त गूढ़ है, सरलता से समझ नहीं आता।

जब वेद के ज्ञाता महर्षि वेद व्यास धर्म के विषय में इतने गंभीर विचारों को उद्घृत कर रहे हैं तब वर्तमान में प्राय वेद न जानने वाले मनुष्य, राजनेता अथवा तथाकथित साधु–संत अपनी मर्जी से वेद–शास्त्र विरूद्ध धर्म की व्याख्या करके धर्म की आड़ में किस–किस प्रकार के घिनौने कर्म

करके पृथ्वी पर अशांति का वातावरण संजो रहे हैं, ये विद्वानों की कल्पना से परे की बात है। क्या यह धर्म और भोली जनता पर कुठारघात फलस्वरूप अंधविश्वास, थोथे कर्मकाण्ड, भ्रष्टाचार, जातिवाद, दलितों पर अत्याचार, नारी अपमान, दुष्कर्म, चोरी–डकैती, हिंसा, नफरत इत्यादि अनेक आपराधिक वृत्तियों के उदय होने का कारण नहीं है?इस गंभीर विषय में व्यासमुनि जी पुन कहते हैं – ''धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षित'' अर्थात् नष्ट किया हुआ धर्म मनुष्य को मार देता है और रक्षा किया हुआ धर्म, रक्षा करता है।

वेद एवं वेदों से उत्पन्न धर्म के ज्ञाता नित्य यज्ञ करने वाले, सत्यवादी युधिष्ठिर तो धर्म के विषय में भयभीत हुए स्पष्ट कहते हैं –''मैं धर्म का त्याग नहीं करता कि कहीं रूष्ट होकर वह धर्म मेरा ही नाश ना कर दे। '' इसी वैदिक तथ्य के आधार पर ही तो योगेश्वर श्रीष्ण महाराज ने अर्जुन को भगवद्गीता में धर्म की रक्षा करने के लिए अधर्म का आचरण करने वाले कौरवों से युद्ध करने की प्रेरणा दी। धर्म की रक्षा करने का भाव यही है कि वेदों में कहे शुभ कर्म और वेदों में ईश्वर द्वारा बनाए नियमों का हम पालन करें।

श्रीमदभगवद्गीता के पहले श्लोक का प्रथम पद – '' धर्मक्षेत्रे'' है जिसका अर्थ है धर्म के मैदान में। अब यहां कोई हिन्दु, मुस्लिम, बात नहीं कही गई। यहां धर्म शब्द का अर्थ यह है कि वेदमार्ग पर चलते हुए शुभ कर्म करना। कौरवों ने वेदमार्ग पर चलना बंद कर दिया था। धृतराष्ट्र ने अपने भाई पाण्डु का राज छीनकर अपने बेटे दुर्योधन को दिया, दुर्योधन ने भीम को जहर दिया, नदी में बहाया, पांचों पाण्डवों को लाक्षागृह में जलाने का प्रयत्न किया, द्रौपदी का चीरहरण किया, युधिष्ठिर महाराज को जबरदस्ती जुआ खेलने पर विवश किया। कीचक ने द्रौपदी से दुर्वयवहार किया। दुर्योधन ने माता–पिता, वृद्धों और पाण्डवों का निरादर किया, ऋषि–मुनियों आदि का निरादर करना शुरू किया, इत्यादि अनेक अधर्मयुक्त कर्मों को करना आरंभ कर दिया था। इसी अधर्म का नाश करके धर्म अर्थात् वैदिक शुभ कर्म और नियम को पुन पृथ्वी पर स्थापित करने के लिए महाभारत का युद्ध हुआ। फलस्वरूप ही श्रीमदभगवद्गीता के पहले श्लोक का पद '' धर्म क्षेत्र'' से प्रारंभ होता है जो वर्तमान काल में अतिगहन एवं गंभीर चिंतन का विषय है क्योंकि आज पृथ्वी पर अनेक मतमतान्तरों का उदय हो चुका है।

अब समस्या यह है कि श्रीष्ण महाराज के मुख से इन शब्दों को निकले लगभग सवा पांच हजार वर्ष से भी अधिक समय व्यतीत हो चुका है। तो क्या हम इस धर्म शब्द की व्याख्या सवा पांच हजार वर्ष पहले के समय जब केवल चारों वेद ही जनता के आचरण में थे, तो उन वेदों के अनुसार करें अथवा

वर्तमान के मत–मतान्तरों के अनुसार करें। वस्तुतः हम सनातन एवं अविनाशी ईश्वर से उत्पन्न वैदिक संसति का त्याग ना करते हुए भगवद्गीता ग्रन्थ में कहे धर्म, कर्म अथवा किसी भी पद का अर्थ व भाव वेदों, शास्त्रो व उपनिषद् आदि ऋषि प्रणीत पुरातन ग्रंथों के अनुसार ही करें क्योंकि भगवद्गीता में सनातन वैदिक पद्धति को ही अपनाया गया है अन्यथा गीता के श्लोकों का भी अर्थ का अनर्थ हो जाएगा। धर्म किसी व्यक्ति से उत्पन्न न होकर परमात्मा से उत्पन्न हुआ है और उस धर्म का वर्णन ईश्वर ने चारों वेदों में किया है जिसमें बताया कि वेदाध्ययन, यज्ञ ब्रह्मचर्य, माता–पिता, गुरू, वृद्धों की सेवा आदि जितने भी वेदों में कर्तव्य मनुष्य जाति के लिए कहे हैं उनको वेदाध्ययन द्वारा विद्वानों से समझकर . जानकर उन शुभ कर्मों को करना अनादि काल से चला आ रहा है, इसे ही मनुष्य का धर्म (कर्तव्य कर्म करना) कहा है। जिसका वर्णन महर्षि जैमिनी ने मीमांसा शास्त्र सूत्र 1.2 में इस प्रकार कहा ''चोदनालक्षणोअपिर्थो धर्म'' अर्थात् वेद प्रतिपादित अर्थ को धर्म (कर्तव्य कर्म) कहते हैं, परंतु ना जाने आज वेद विद्या को ना जानने वाले तथा–कथित सन्तों और अन्य महानुभावों को ना परमेश्वर से और ना परमेश्वर निर्मित धर्म से डर लगता है।

इसका मुख्य कारण यही है कि वर्तमान युग में स्वार्थ वश तथा–कथित सन्तों एवं अन्य महानुभावों ने वेदाध्ययन की ओर से मुख मोड़ लिया है फलस्वरूप परमेश्वर से उत्पन्न वेद विद्या में जो नियम एवं व्याख्याएं धर्म आदि के विषय में हुई हैं, वे उनसे पूर्णत अनभिज्ञ हैं अत महाभारत ग्रन्थ के अनुसार शब्द. ब्रह्म (वेद) के ज्ञाता ना हेने के कारण अर्थ का अनर्थ करके यह उनका आलस्यवान् कर्म संपूर्ण विश्व को दिशाहीन करके बहुमूल्य मनुष्य जन्म दुखों के सागर में धकेल रहा है। अब हम ऋग्वेद मंत्र 8.98.1 पर विचार करें जिसमें धर्म का निर्माता परमेश्वर को कहा है अत मनुष्य धर्म का निर्माता नहीं हो सकता। मंत्र में कहा ''बृहते'' सबसे महान् ''धर्मते'' धर्म के निर्माता अर्थात् कर्तव्य–कर्म. नियमों के निर्माता ''इन्द्राय'' परमेश्वर के लिए ''बृहत् साम गायत'' महान् सामवेद का गायन करो।

भाव यह है कि परमेश्वर ही धर्म अर्थात् शाश्वत कर्तव्य –कर्मों, नियमों और सिद्धातों का निर्माता है जिनके आधार पर यह संसार टिका है। पुन ऋग्वेद 8.43.24 का उपदेश है ''अध्यक्षं धर्मणाभिमं'' जिसका अर्थ है कि परमेश्वर समस्त धर्मों (वैदिक कर्म एवं नियमों) का अध्यक्ष है। महामुनि जैमिनी ने धर्म के विषय में अपने मीमांसा दर्शन सूत्र 1.2 में कहा कि '' नोदना लक्षण अर्थ धर्म '' अर्थात् धर्म का लक्षण वैदिक (नोदना) प्रेरणा से धर्म जाना जाता है। यहां प्रेरणा का तात्पर्य ईश्वर द्वारा वेदों में दी गई प्रेरणा से है (देखें ऋग्वेद मंत्र 2.

12.6)। ''अर्थ'' शब्द से तात्पर्य है सुख प्राप्ति अर्थात मोक्ष प्राप्ति। भाव यह है कि ईश्वर ने जो धर्म (प्रेरणायुक्त शुभ कर्म) वेदों में कहा है उसको सुनने एवं आचरण में लाने से मनुष्य सब दुखों का नाश करता है और ईश्वर त यह वैदिक धर्म अनादि एवं अविनाशी है। मनुष्य जो नियम–धर्म बनाते हैं, वे प्रलय तक तो टिक सकते हैं। परंतु प्रलय में नष्ट हो जाते हैं और दूसरा यह कि मनुष्यों द्वारा बनाए धर्म–कर्म इत्यादि कभी सुख नहीं दे सकते। धर्म का अर्थ ही वैदिक शुभ कर्मों को धारण करना कहा है।

राष्ट्र की संसति तभी विकसित होती है और जनता खुशहाल होती है जब उसकी राजनैतिक व सामाजिक उन्नति प्रथम उक्त धर्म को (अर्थात् धर्म के सत्य अविनाशी स्वरूप को) जानकर, उसको आचरण में लाया जाए। यदि धर्म वेद विरूद्ध होगा तब अन्धविश्वास, कुरीतियों, स्वार्थ, रूढिवाद, मिथ्या धारणा तर्कहीन युक्तियों पर टिका होगा। तब देश एवं समाज का तेजी से नाश प्रारंभ हो जाता है, ऋषियों द्वारा रचित शास्त्रों में जैसे कि योग–शास्त्र सूत्र 1.7 में किसी भी विषय अथवा विचार को सिद्ध करने के लिए वेद मंत्र का प्रमाण प्रस्तुत करने को कहा है। आज जो हम धर्म की व्याख्या कर रहे हैं, उसका वेद शास्त्रों और उपनिषद् आदि का कहीं भी वर्णन नहीं है, अत विद्वानों द्वारा मनुष्य त धर्म की व्याख्या स्वीत नहीं है।

आज संपूर्ण मानव जाति को वेदाध्ययन के पश्चात् प्रथम धर्म की व्याख्या सुनिश्चित करके तत्पश्चात् पिछले युगों की भांति धर्म पर आचरण करने की आवश्कता है साथ–साथ हम सब मजहब का आदर करना भी न भूलें। फलस्वरूप ही देश में शांति स्थापित करना संभव है अन्यथा मनुष्य निर्मित धर्म (मजहब) के नाम पर मानवता का कितना खून बह चुका है और भविष्य में कितना बहेगा इसका अनुमान लगाना पूर्णतया असंभव है।

आवश्यक सूचना

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा का **चौदहवां वार्षिकोत्सव,**
01 से 07 सितम्बर 2020 को मनाया जायेगा।

आत्मचिंतन - ३

दीप्ति, सरसावा

पिछले लेख में हमनें यह निष्कर्ष निकाला कि इस मनुष्य जीवन की सार्थकता परमतत्व परब्रह्म धनी की प्राप्ती में ही है, और इसके लिए हमें अपनी दिनचर्या में प्रेममयी ध्यान, वाणी मंथन तथा प्रेम–सेवा को प्राथमिकता देनी ही होगी। अन्य कोई भी विकल्प नहीं है, इस मायावी विषय–सुखों की दावाग्नि से परे हो धनी से एक रूप होकर अखंड प्रेम भाांति और आनन्द प्राप्ति का।

सुन्दरसाथ जी! आज हम हमारी आत्म–जागृति का इन तीनों सोपानों के विषय में कुछ चिंतन करें। प्रेममयी ध्यान, प्रेम सेवा, ब्रह्मवाणी मंथन। जैसे कि हम सबने पूज्य श्री स्वामी जी की चर्चा में अनेक बार सुना है कि ध्यान हमारी गरदन है, सेवा और ब्रह्मवाणी हमारे हाथ–पैर हैं। कदाचित् किसी व्यक्ति के हाथ पैर काट दिए जाएं, तो उसका जीवन कठिन अवश्य बन जाएगा, लेकिन वो फिर भी जीवित तो रहेगा, किन्तु यदि उसकी गरदन काट दी जाए तो वो मर जाएगा। ठीक उसी प्रकार यदि कोई विषम परिस्थितियों के चलते प्रेम सेवा या वाणी मंथन ना कर सके, तो हमें हमारे लक्ष्य तक पहोचनें में कठिनाई अवश्य होगी, लेकिन फिर भी यदि हम निष्ठापूर्वक ध्यान करेंगे तो लक्ष्य तक पहुँचना संभव है। किन्तु यदि ध्यान ही छूट जाएगा तो हमारी आत्मा–जागृति का लक्ष्य कभी पूर्ण नहीं हो सकेगा।

सुन्दरसाथ जी! जैसे बीतक में श्री देवचन्द्र जी द्वारा 14 वर्ष निष्ठापूर्वक भागवत श्रवन का प्रसंग आता है, ठीक उसी प्रकार हमें निष्ठापूर्वक प्रियतम का प्रेममयी ध्यान करना ही होगा। चाहे प्राण छूट जांए या संसार रूठ जाए, प्रियतम से हमारा प्रेम करना अर्थात् प्रेममयी ध्यान नहीं छूटना चाहिए। श्री देवचन्द्र जी की यह निष्ठा ही तो थी, जिसने धनी को उनके समक्ष आने पर विवश कर दिया था, तो हम जब प्रेम से धनी को अपने धाम हृदय में निष्ठापूर्वक पुकारेंगे तो धनी क्यूं नहीं आऐंगे?अवश्य ही आना पडेगा उन्हें, यदि हमारी निष्ठा और प्रेम भरी पुकार में कोई कमी नहीं है तो तभी तो हमारे वाला जी ने वाणी में कहा है – एक साद कर मोहे, मैं जी जी करू दस बेर।

सुन्दरसाथ जी! ध्यान के लिए निष्ठा और प्रेम दोनों ही अनिवार्य हैं। निष्ठा के विषय में हमने जाना, अब आज प्रेम के विषय में हम चिंतन करते हैं। यदि

देखा जाए तो सारे संसार में अनेकों पंथ है जो ध्यान की महत्ता को जानते हुए, ध्यान करने के लिए प्रेरित करते हैं। लेकिन उनके पास श्री तारतम वाणी का प्रकाश ना होने के कारण वे यह नहीं जानते कि किसका ध्यान करना है और कैसे?और जब तक उस परब्रह्म धनी के धाम, स्वरूप व लीला का ज्ञान ही न हो, तो पहेचान के बिना प्रेम कैसे संभव हो सकता है?किन्तु सुन्दरसथ जी धनी की मेहेर और उनसे मूल निसबत के कारण हमें श्री ब्रह्मवाणी का प्रकास मिला है, उस प्रकास को हमारे हृदय मे उतारने वाले हादी सदगुरू मिले हैं। अब यदि कमी है तो केवल वानी में अमृत वचनों को हमारे आचरण में उतारने की। तो हम यह चिंतन कर रहे हैं कि प्रेममयी ध्यान कैसे हो?

सुन्दरसाथ जी हमें प्रेम–भाव किसी व्यक्ति के प्रति तभी आता है, जब हम उसके साथ समय व्यतीत करते हैं, उसके स्वभाव को (गुणों को) जानते हैं, उसके दिल के भावों को समझते हैं। अर्थात् पेहेचान होने पर ही प्रेम आता है। श्री मुखवाणी ही वो अमृत सागर है, जिससे की हमें धनी की, उनके दिल (में हमारे लिए उमड़ते अनंत प्रेम सागरों) की धनी के साथ हमारी आत्मा के अनादि प्रेम–संबध की पेहेचान होगी। जरा देखिए तो ब्रह्मवाणी की इस चौपाई में धनी हमें क्या कह रहें हैं–

इत आँखे चाहिए हक इलम की, तो हक देखिए नैना बातून।
नैना बातून खूले हक इलमे, ए सहूर है बिच मोमिन। ।

अर्थात्, सुन्दरसाथ जी! हमारी आत्मिक द्रष्टि जिससे हमें धनी का दीदार होगा वह कब खुलेगी?जब हम हक इलम अर्थात् श्री मुखवाणी के एक–एक वचन (शब्द) हमारे प्रियतम के द्वारा हमारे लिए उड़ेले गये उनके दिल के अनंत प्रेम को अनुभव करेंगे। और ऐसा संभव होगा श्री मुखवाणी मंथन से ना कि सैंकडों पाठ–पारायण या सेवा पूजा करने से। तभी तो साथ जी धनी ने वाणी में हमें कहा है–

ए सुख इन सरूप को, और आसिक एही आराम।
जोलों इस्क न आवहीं, तोलों इलम एही विश्राम।।
सागर–5/13

ए क्यों रहे पट अर्स में, पूछ देखो हक।
ओ उड़ाए देसी पट बीच का, जब रूह हुकमें आई कदम।। सिनगार–11/65

जो पीठ दीजे ब्रह्मांड को, हुआ निसदिन हक सहूर।
तब परदा उड़ाए फरामोस का, बका अर्स हक हजूर।। सिनगार–11/70

अर्थात् सुन्दरसाथ जी श्री ब्रह्मवाणी ही वह–सोपान (साधन) है, जो हमारे और धनी के बीच पड़े इस माया के पर्दे को हटा सकती है, किन्तु इसके लिए हमें माया को निरंतर पीठ देकर, वाणी के माध्यम से धनी के हृदय में ही बसना होगा। और तभी हमें धनी की वास्तविक पेहेचान होगी, जिससे कि हमारे हृदय में धनी के लिए प्रेम का झरना झरने लगेगा, और केवल हमारा ध्यान ही नहीं जीवन भी प्रेममयी बन

जाएगा। इतना ही नहीं हमारे रोम–रोम से धनी के प्रेम की ही सुगन्धिं चारों ओर प्रवाहित होने लगेगी। जिससे आकर्षित हो सभी प्राणी प्रेममयी ध्यान में डूब अपने प्राणवल्लभ अपने जीवन, धनी को हमेशा–हमेशा के लिए पाकर उनसे एक हो जाएंगे और तभी ब्रह्मवाणी के निम्न कथन सार्थक होगें–

रहे ना सकूं मै रूहों बिना, रूहें रहे ना सके मुझ बीन।
जब पेहेचान होवे वाको, तब सहे ना विछोहा खिन।।
न्यारा निमख ना होवहीं, करने पड़े ना याद।
आसिक को मासूक का, कोई इन विध लाग्या स्वाद।।

प्यारे सुन्दरसाथ जी ! प्रेममयी ध्यान और श्री मुखवाणी का ज्ञान दोनों ही एक–दूसरें के पूरक हैं और प्छज्म्त्स्प्छज्ञम्क्म हैं। ये दोनों ही सोपान हमारी आतम–जागृति के लिए अनिवार्य हैं और तीसरा है–प्रेम सेवा।

तुम प्रेम सेवा से पाओगे पार, ए वचन धनी के कहे निरधार। ।

हमारी प्रथम अनिवार्यता ध्यान और वाणी मंथन ही होनी चाहिए और शेष समय निःस्वार्थ सेवा में व्यतीत करना चाहिए। चाहे हम तन से शारीरिक सेवा करें, धन से आर्थिक सेवा करें, या बुद्धि के द्वारा ज्ञानार्जन कर जन–जन तक अपने धनी की पहचान कराने में किसी ना किसी रूप में भागीदार अवश्य बने।

साथ जी एक बात अवश्य याद रखनी चाहिए कि जब तक धनी ना चाहें ना तो हम प्रेममयी ध्यान कर सकते हैं और न ही सेवा कर सकते हैं। लेकिन हमें अपनी तरफ से 100/. प्रामाणिक, निष्ठापूर्वक पुरूषार्थ करते रहना चाहिए और धनी की मेहेर से हम इन तीनों क्षेत्रों में चाहें कितने भी उच्च स्तर पर पहोंच जाएं, इसका अहंकार नहीं करना चाहिए, अन्यथा हम अपने धनी से दूर हो जाऐगें। तो मेरे प्यारे सुन्दरसाथ जी हमेशा स्मरण रखें कि–

हुआ है सब हुकमें, होत है हुकम।
होसी सब कछु हुकमें, कछु ना बिना हुकम खसम। ।

केहेत कहेलावत तुमहीं, करत करावत तुम।
हुआ है होसी सब तुमसें, ए फल खुदाई इलम।।

पूरे ब्रह्मांड में धनी ने र्सिफ हमें चुना है अपनी सेवा के लिए, प्रेम के लिए !! इसलिए हमेसा उनका भ्ाुकराना करते रहना चाहिए। उनके प्रेम को अपनी हर एक साँस में मेहेसूस करते रहना चाहिए। प्रतिपल उनके हृदय में और अंदर उतरते डूबते रहना चाहिए।

श्री महामत कहे तुम पर मोमिनों, दम दम जो बरतत।
सो सब इस्क हक का, पल पल मेहेर करत।

प्रेम पाश में श्री राजजी को बांधना

अवधेश कुमार मिश्रा

प्रेम प्रेम सब कोई कहे प्रेम न चीन्हे कोय।
आठ पहर भीना रहे प्रेम कहावे सोय। ।

उपरोक्त पद में एक बड़े ही मर्म की बात बतायी गयी है कि प्रेम शब्दोच्चारण लौकिक जगत के सभी लोग किया करते हैं परन्तु इस अलौकिक तत्व का बोध किसी को नहीं है। निजधाम की प्यारी अंगनाएं पिया जी के प्रेम रस में आठों पहर डूबी रहती हैं कुछ ऐसा ही भाव समस्त गोपी जन का ब्रजमंडल में भी था। इस विलक्षण प्रेम की अभिव्यक्ति लौकिक जगत में सर्वथा असम्भव है। यह प्रेम परमात्म्य है और यह उनकी प्यारी अंगनाओं के हृदय धाम में निरन्तर प्रवाहित होता रहता है।

इस परमात्म्य प्रेम में अद्‌भुत सामर्थ्य (शक्ति) है। यदि उस परमात्मा को झुकाने की सामर्थ्य किसी में है तो वह केवल और केवल प्रेम में ही है।

प्रेम श्यामा श्याम अपने, प्रेम ही निजधाम है।
प्रेम की सखियाँ सनातन, कोटि – कोटि प्रणाम है। ।

चाहे निजधाम में हो, चाहे ब्रजमंडल में हो, चाहे विशुद्ध महारास में हो और चाहे इस जागनीरास के ब्रह्माण्ड में हो प्रेम के वशीभूत होकर कितनी ही बार हमने निज श्री धामधनी जी को झुकते देखा है। यह रहस्य आनुभूतिक है।

श्री धामधनी जी प्रेम में झुके हैं इसका एकमात्र अभिप्राय यह हुआ कि प्रेम में झुकाने की सामर्थ्य है और जो प्रेम अनादि अक्षरातीत परमात्मा श्री राज जी को झुका सकता है, वह शब्दातीत प्रेम जगत में आया मात्र हम ब्रह्मसृष्टियों के लिए। निस्सन्देह वह प्रेम सम्पूर्ण मानवता को अखण्ड कर सकता है।

प्रेम में झुकते हुए निज श्री धामधनी ने मुझ अंगनाओं को यही शिक्षा दी है कि यदि आप सामने वाले से प्रेम पूर्ण व्यवहार करते हैं तो निस्सन्देह आप उसके ऊपर अपना आधिपत्य भी जमा लेते हैं। यही हमारे निजधर्म निजकर्म का मूलाधार है।

श्री धामधनी को प्राप्त करना चाहते हैं तो प्रेम से से सराबोर उपासना करो। संसार की अन्य अनेक उपासना पद्धति से तो त्रिदेवादि को ही पाया

जा सकता है लेकिन प्रेमोपासना के द्वारा पूर्ण पुरुषोत्तम को रिझाया जा सकता है।

प्रेम एक ऐसा मधुरातिमधुर अलौकिक रसायन है जो अलौकिक सम्बन्ध को मधुर बनाता है। प्रेम निजधाम का मार्गदर्शन करता है और प्रेम में वे सारे तत्व विद्यमान हैं जो निजधाम में सहज प्रवाहमान हैं यथा अखण्ड अनन्त अद्वैतादि। इस कराल कलिकाल में परमात्म्य तत्व को लेकर हमारे श्री सद्गुरू महाराज प्रगटे पुरी नवतन और आज भी हमारे प्रेमभाव को देखकर वे श्री सद्गुरू अलौकिक स्वरूप में प्रकट होते रहते हैं।

प्रेममय जीवन हमारा प्रेम ही आधार है।
प्रेम शब्दों से विनिर्मित हार ही उपहार है। ।

मृत्यु भोज पर कविता

जिस आँगन में पुत्र शोक से बिलख रही माता,
वहाँ पहुच कर स्वाद जीव का तुमको कैसे भाता।
पति के चिर वियोग में जब व्याकुल युवती विधवा रोती,
बड़े चाव से पंगत खाते तुम्हें पीर नहीं होती।
मरने वालों के प्रति अपना सदव्यहार निभाओ,
धर्म यही कहता है बंधुओ मृतक भोज मत खाओ।
चला गया संसार छोड़ कर जिसका पालन हारा,
पड़ा चेतना हीन जहाँ पर वज्रपात दे मारा।
खुद भूखे रह कर भी परिजन तेरहवी खिलाते,
अंधी परम्परा के पीछे जीते जी मर जाते।
इस कुरीति के उन्मूलन का साहस कर दिखलाओ
सच्चा धर्म यही कहता है बंधुओ, मृतक भोज मत खाओ।

पारब्रह्म की दिव्य लीलाएं

राजबाला, बेहट

प्रत्येक वर्ष श्रावण मास की पंचमी से निजानन्द सम्प्रदाय के प्रत्येक मन्दिर, आश्रम तथा सेवाभावी सुन्दरसाथ जी के घर आंगन में छोटे–बड़े रूप में श्री बीतक साहिब चर्चा का आयोजन पारम्परिक रूप से किया जाता है। श्री बीतक साहिब कोई मानव इतिहास नहीं है और न ही किसी भगवान, आचार्य, सन्त, मनीषी या गुरू का अपने शिष्य, भक्तों के साथ घटित होने वाला इतिहास है या वृतान्त है। बल्कि स्वलीला अद्वैत सच्चिदानन्द पारब्रह्म परमात्मा का अपनी आवेश शक्ति द्वारा श्री महामति जी के धाम हृदय में विराजमान हो कर उन्हें श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में अपने जैसा ही बना देने और माया के अंधकार में भटक रही आत्माओं को क्षर–अक्षर से परे परमधाम की अलौकिक राह दिखाने की दिव्य लीला का वर्णन ही श्री बीतक साहिब है।

वि. सं. 1751 में श्रीजी अपनी लगभग 75 वर्ष की दर्शन लीला छुपा कर समाधिस्थ हो गये थे और बातूनी रूप से सुन्दरसाथ के हृदय कमल में। इसके पश्चात पन्ना जी में स्थित श्री गुम्मट जी में सिंहासन पर श्री कुलजम स्वरूप साहिब को उनका वांग्मय तथा ज्ञानमय कलेवर मानकर पधराया गया था। यहीं से उनकी सेवा पूजा की परम्परा प्रारम्भ हुई। हम सब सुन्दरसाथ जी को ब्रह्मवाणी को ही अन्तिम सत्य स्वरूप मानकर अंगीकार करना चाहिए।

सृष्टि के प्रारम्भ से ही कुछ ऐसे प्रश्न हैं जिनका यथोचित उत्तर जानने का प्रयास प्रत्येक ज्ञान का जिज्ञासु, मनीषी करता रहा है। मैं कौन हूँ?कहाँ से आया हूँ?मृत्यु के पश्चात कहाँ जाऊँगा?पारब्रह्म परमात्मा कौन है?कहाँ है?कैसा है?उसका धाम कहाँ है?यह सृष्टि कैसे बनी?कैसे लय को प्राप्त होगी। प्रलय के पश्चात इसका क्या अस्तित्व होगा तारतम्य ज्ञान द्वारा ही इन प्रश्नों का यथोचित उत्तर सम्भव है। सुन्दरसाथ तारतम्य के प्रकाश में इन सभी प्रश्नों का उत्तर श्री बीतक साहिब और स्वरूप साहिब (श्री कुलजम स्वरूप) से प्राप्त होता है।

परात्म और सच्चिदानन्द पारब्रह्म की ब्रह्म लीला जो अनन्त काल से होती आ रही है और होती रहेगी। वर्तमान में भी हो रही है। इसका सम्पूर्ण घटनाचक्र ही श्री बीतक साहिब है।

महाकारण

जो कारण दृश्टिगोचर होता है उसके पीछे कारण अवश्य होता है। किन्तु कारण का भी जो कारण होता है वह महाकारण है। उस स्वलीला अद्वैत परमधाम के कण–कण में पारब्रह्म सच्चिदानन्द की लीला होती है।

वहाँ पर श्री राजजी स्वयं, श्यामा जी, सखियां, अक्षरब्रह्म और महालक्ष्मी जी इन पाँचों का अद्वैत स्वरूप है। अक्षरातीत का हृदय परम सत्य (मारफत) का स्वरूप है। वो सत्य यर्थाथ हकीकत के रूप में श्यामाजी, सखियां, अक्षर ब्रह्म, महालक्ष्मी जी हैं एवं पच्चीस पक्षों के रूप में क्रीड़ा कर रहे हैं।

हक हादी अर्स मोमिन,
सो तो पहले ही हक दिल माहें।

जो चीज प्यारी रूह को,
ताए हक पल छोड़े नाहें।। सि. 2/17

परन्तु इस भेद का पता श्यामाजी, सखियां और अक्षर ब्रह्म में से किसी को नहीं था। धामधनी ने अपने दिल में ये बात ली कि इन सब रूहों को इस बात की पहचान करा दूं कि उनका रूप मेरा ही स्वरूप है और उनका प्रेम मेरा ही प्रेम है। परमधाम के पच्चीस पक्षों की लीला मेरे हृदय का ही प्रकट रूप है।

एक पातसाही हक की,
और वाहेदत का इश्क।

सो दिखलावने रूहों को,
पहले दिन में लिया हक।। खि. 6/46

अक्षरातीत के हृदय में प्रकट होने होने वाली इस स्वाभाविक इच्छा को ही खेल का महाकारण कहते हैं। इसी इच्छा के परिणामस्वरूप ही अक्षर ब्रह्म ने तीसरी भोम की पड़साल में विद्यमान सखियों को देखा तथा सखियों ने अक्षर ब्रह्म को देखा। दोनों ने एक दूसरे की लीला को देखने की इच्छा की।

जो पेहेले लई हकें दिल में,
पीछे आयी माहें नूर।

तिन पीछे हादी रूहन में,
ए जो कर हुआ जहूर।। खि. 6/44

परमधाम में प्रेम लीला अनन्त काल से चल रही थी, उसके साथ–साथ प्रेम विवाद भी चला आ रहा था कि किसका प्रेम बड़ा है और कौन किसको रिझाता है। जब सखियों ने अक्षर ब्रह्म को देखा तो तभी सखियों के दिल में आया कि अक्षर ब्रह्म क्या लीला करते हैं। इनकी लीला कुछ अधिक ही आनन्ददायी है। इसे देखने की इच्छा बलवती हुई। अक्षर ब्रह्म को श्री राजजी, श्यामाजी और सखियों की लीला देखने की इच्छा बलवती हुई।

अक्षर मन उपजी आस,
देखो धनी जी का प्रेम विलास।

तब सखियों मन उपजी ए,
खेल देखे अक्षर का जेह।।

एह खेल देखन की,
इच्छा उपजाई दोय।

अक्षर और सैंयन को,
आदि अनादिफल कहयो सोय।

ताके तीन तकरार कहे,
सो भये तीनों इण्ड।

ताकी बीतक जुदी–जुदी,
माया मिथ्या नूर ब्रह्माण्ड।।

इस माया मिथ्या–नूर ब्रह्मण्ड के तीन अलग–अलग भाग हैं। बृज, रास और जागनी। इन तीनों में अलग–अलग प्रकार की तीन लीला हुई हैं। जिस प्रकार एक जादूगर अपनी जादू की शक्ति से मिथ्या एवं चमत्कारी खेल दिखाता है उसी प्रकार अक्षर का मन

अव्याकृत अपनी माया से मिथ्या लीलाएं करता है।

बृज लीला

कालमाया के ब्रह्माण्ड में हुई जिसमें 11 वर्ष और 52 दिन तक लीला हुई। विष्णु भगवान कारागाह के अन्दर वसुदेव के पुत्र के रूप में अवतीर्ण हुए। नन्द के घर पहुँचने पर उस बालक में अक्षरातीत का आवेश और जोश, अक्षर की आत्मा के साथ प्रविष्ट हुआ। ''सो सूरत धनी को ले आवेश, नन्द घर कियो प्रवेश'' परमधाम की आत्माएं गोपियों के तनों में प्रविष्ट हुई तथा अक्षर ब्रह्म द्वारा धारण की गई चौबीस हजार सूरताएं भी खेल में आई जिन्हें कुमारिकाएं कहा गया है। बृज में षकटासुर, अघासुर, बकासुर, पूतना बध, कालिया दमन, इन्द्र मद दमन आदि मनोहर लीलाएं हुई। 11 वर्ष व्यतीत होने पर 52 दिन की वियोग लीला हुई। इसके पश्चात अक्षरातीत योगमाया के जाग्रत ब्रह्मण्ड में आए।

रास लीला

महारास की लीला योगमाया के ब्रह्माण्ड में हुई (केवल ब्रह्म में)। इस लीला में सखियों ने विरह और विलास का प्रत्यक्ष अनुभव किया। इसके पश्चात धामधनी अपनी आत्माओं के साथ पुनः परमधाम आ गये। क्योंकि जब सखियों से पूछा गया कि महारास लीला कैसी लगी तब ब्रह्मात्माओं ने कहा कि रास लीला अच्छी लगी परन्तु जब आप अन्तर्धान हो गये तब असहय विरह हुआ। तब स्वयं धनी जी ने कहा कि जहाँ एक पल की भी पृथकता नहीं है वह तो मेरा परमधाम है। वहाँ चलो। परमधाम पहुँचकर सखियों ने कहा कि वह दुःखरूपी खेल तो आपने दिखाया ही नहीं। तब यह तीसरा जागनी ब्रह्माण्ड बनाया गया।

बृज रास दोऊ अखण्ड,
कर चेतन बुद्धि फिरे मन।

एक ब्रह्माण्ड तीसरा,
जहाँ महमद आए रोशन।।

अक्षर ब्रह्म की जाग्रत बुद्धि के स्वरूप केवल ब्रह्म मे होने वाली यह लीला उनके चित्त स्वरूप सबलिक के महाकारण में अखण्ड हो गई तथा बृज लीला भी सबलिक ब्रह्म के कारण में अखण्ड हो गई। तब पुनः कालमाया का जागनी ब्रह्माण्ड बना जिसमें मुहम्मद साहेब ने आकर अखण्ड ज्ञान का प्रकाश कुरान के माध्यम से किया। इसी स्वरूप द्वारा इस्लामी जगत में शरीयत (कर्मकाण्ड) के मार्ग का प्रसार हुआ। कुरान में छः दिनों का प्रसंग वर्णित है।

छै दिन कुरान में, वाके भय जब।
ता दिन की हकीकत, सारी छिपी कही तब।।

पहला दिन बृज का (हूद नबी घर तूफान), दूसरा दिन रास की लीला (नूह नबी के घर तूफान)। तीसरे दिन की लीला अरब की धरती पर मुहम्मद साहिब के तन से 63 वर्ष की अवस्था तक चली। कुरान में उन्होंने एक पारब्रह्म की बन्दगी करने का विश्वास दिलाया।

साल नव सै नब्बे,
मास नव हुए रसूल को जब।
रूह अल्लाह मिसल गाजियो,
सैंयां उतरे तब।।

रसूल साहिब को पर्दे में हुए जब 990 वर्ष 9 माह हो गये तब पारब्रह्म की आहलादनी शक्ति श्यामाजी अपनी ब्रह्मात्माओं के साथ संसार में आई, जो दीन धर्म

पर अपना सर्वस्व समर्पण करने वाली हैं। वि. सं. 1638 में आश्विन मास शुक्ल पक्ष चतुदशी को श्री देवचन्द्र जी का जन्म मारवाड़ प्रान्त में हुआ। इसी तन में श्यामाजी ने प्रवेश किया। ग्राम उमरकोट, पिता मतु मेहता, माता कुंवरबाई थी। तीसरे उम्र के पड़ाव में पुत्र रत्न पाकर अति हर्शित हुए।

सुखदाई सबन को,
अखण्ड करन हार।

विश्व वंदे अक्षर लों,
सुके परीक्षित सो कहयो विचार।।

शुकदेव जी ने परीक्षित को यह बात बताई है कि संसार के लोग तो आदिनारायण तक या अक्षर विभूति पाद पद तक की भक्ति करते हैं। ये तो साक्षात अक्षरातीत की आहलादनी शक्ति हैं। इनके कारण सबको अखण्ड मुक्ति प्राप्त होगी। चौथे दिन की सिफत कही है।

सोई सूरत कुरान में,
लिखी एक सौ बीस वर्ष।

चार पांच छठा दिन,
तब चाहिर होवे अर्स।।

चौथे दिन का तात्पर्य श्री देवचन्द्र जी के तन की लीला। पाँचवे दिन की लीला श्री प्राणनाथ जी द्वारा ब्रह्मात्माओं की जागनी लीला। छठे दिन में ब्रह्मात्माओं से होने वाली लीला, जिसमें महाराजा छत्रसाल के तन से होने वाली छः वर्षों की आवेश लीला। 120 वर्ष (1638 से 1758 तक) हो जाते हैं। ऐसा अलौकिक तारतम्य ज्ञान श्यामाजी ले कर आए। इसलिए उनको मलकी स्वरूप कहा गया है। जब श्री देवचन्द्र जी दस वर्ष के हुए तभी मन मे खोजी प्रवृति जाग्रत हो गई।

मैं कौन, कहाँ से आइया,
कहाँ है मेरा भरतार।।

अपने ग्राम के अलावा आसपास के गाँवों में भी पूछते फिरे कि परमात्मा कहाँ मिलेगा?मन्दिर में जाकर पूजा, अर्चना परिकरमा करते। फिर कच्छ देश जाने की मन में ठान लेते हैं। बारातियों के साथ न जा पाये, पैदल ही अन्धेरी रात में सुनसान जंगल में चल देते हैं, जहाँ रेत का ही मुल्क होता है। दिल में दहशत होती है। वहाँ पहला दर्शन होता है। श्री राजजी सिपाही के भेष में दर्शन देते हैं।

ए भेष सिपाही का,
कमर कटारी तलवार।

मोह दाढ़ी हाथ बरछी,
ऐसा भेष ल्यावन हार।।

उस पुरूष के दर्शन देने के बाद में विश्वास हो गया कि ये ही मेरे प्राणपति हैं। ये मेरा हाथ छोड़ने वाले नहीं हैं। इसके आगे हरिदास जी से मन्त्र ग्रहण करने के बाद भी बड़ी कसनी की।

इन इत आए करी बड़ी खोज,
चाहे धनी का मूल संजोग।

अंग मूल उपजी ए दृष्टि,
शास्त्र शब्द खोजे कई कष्ठ।।

बड़ी कसनी तपस्या के स्तर पर की। परन्तु सेवा भी छुप–छुपा कर करते हैं।

सेवा करे न जनावहीं,
अपनी आतम के कारण।

दिखावे नहीं काहू को,
समझावे अपना मन।।

अपनी आत्मा के सुख के लिए सेवा करके उसे प्रकट नहीं करते हैं। वे अपने मन को विवेकपूर्वक संसार से हटाए रहते हैं। त्याग, संयम, श्रद्धा, भक्ति का प्रदर्शन नहीं करते। सेवा भक्ति गोपनीयता में ही फलीभूत होती है। इसका वाचन करना आत्म कल्याण में बाधक है।

चौदह बरस लो नेष्टा बंध,

वचन ग्रहे सारी सनंध।

कई जप तप किए व्रत नेम,
सेवा सरूप स्नेह अति प्रेम।।

भागवत श्रवण में बड़ी निष्ठा दर्शायी। कान्हजी भट्ट के पास चौदह वर्षों तक सारी वास्तविकता ग्रहण की। बृज–रास के स्वरूपों के प्रति अति प्रेम रखते थे। चितवनी भी करते थे। हम सुन्दरसाथ के मार्ग दर्शन के लिए कई कष्ट उठाए। इसलिए कि आने वाला सुन्दरसाथ किसी ढोंग या पाखण्ड के चक्कर में न पड़े। स्वयं इतनी कसोटियां की। दूसरा दर्शन बृज का होता है चितवनी में। तीसरा दर्शन श्यामजी के मन्दिर में होता है जिसके द्वारा परमधाम की सब निधी प्राप्त होती है।

वय किशोर अति सुन्दर,
स्वरूप खेला जो वृन्दावन।

देख श्री देवचन्द्र जी ने कहया,
जैसी गवाही दई मन।।

श्री राज जी ने अति सुन्दर किशोर स्वरूप, आवेश स्वरूप में जो वृन्दावन में खेला था दर्शन दिया और पूछा कि आपको पहचानते हो, कौन कहाँ से आए तुम। तब श्री देवचन्द्र जी ने कहा – **तुम हमारे खाविन्द हो, एता जानत हम।** आप हमारे प्राण प्रियतम हो बस हम इतना जानते हैं। तब श्री राजजी कहते हैं कि आओ अब हम बताऐगें कि आप कौन हैं। आप श्यामा महारानी हो। बृज–रास में तुम्हारे मनोरथ पूरे नहीं हुए थे। इसलिए यह तीसरे ब्रह्माण्ड की रचना कराई गई। अब सुन्दरसाथ की आत्म जाग्रति करके परमधाम वापिस जाना है। भागवत क्या अन्य धर्मग्रन्थ भी आपके माध्यम से खुलेंगे। तब देवचन्द जी ने पूछा कि आप कहां जाओगे?तब श्री राजजी ने कहा कि अब तुम्हारे अन्दर में रहूंगा। **"तुम्हारे अन्दर आकार में, आये के बैठें हम। ए कहे तारतम बीज वचन।" फिर अदृष्ट भये।**

सबसे पहले गांगजी भाई को तारतम दिया और सब बीती बीतक बताई। इस प्रकार 313 आत्माओं को जाग्रत किया। इसके बाद सुन्दरसाथ की कुल जागनी का भार श्री मिहिरराज जी को सौंप कर 1712 में भादों पक्ष शुक्ल में उम्र 74 वर्ष में 2 माह कम में अर्न्तधान हो गये।

संवत सत्रह सौ बारोतरे,
भाद्रो मास उजाला पख।

चतुर्दशी बुधवारी भई,
हुए धनी अलख।।

सभी घटनाओं की साक्षी कुरान में संकेतों में कथानकों के रूप में लिखी हैं। इन रहस्यों को केवल ब्रह्ममुनि ही जानते हैं।

विरोध सारा विश्व का, भागत इन बीतक।
सबको पहिचान होवहीं, पहुँचे कदमों हक।।

संवत 1675 में श्री मिहिरराज जी का जन्म हलार प्रान्त के नवतनपुरी नगर में होता है। पिता केशव ठाकुर, माता धनबाई जी है। इन्हीं मिहिरराज जी के धाम हृदय में पारब्रह्म परमात्मा ने लीला की। वह पाँच भाई होते हैं। हरिवंश, गोवर्धन, ष्यामल, मिहिरराज तथा उद्धव ठाकुर। सतगुरू श्री देवचन्द्र जी से पहला मिलन गोवर्धन जी का होता है। बाद में मिहिरराज जी का। सतगुरू जी ने पहले ही दिन पहचान लिया कि श्री इन्द्रावती जी की आत्मा आई है। सभी जागनी की बातें बताई कि साकुमार और साकुंडल की आत्मा की जाग्रति आप के कर कमलों के द्वारा होगी। सभी वर्णों और जातियों में अपने धाम की आत्माएं अवतरित हुई हैं। श्रीजी संसार के लौकिक कार्यों को करते हुए कैसे–कैसे ब्रह्मात्माओं की जागनी करते हैं।

अन्तर्ध्यान लीला के बाद श्री सतगुरू देवचन्द्र जी की आत्म दुल्हन भी उन्हीं के धाम हृदय में बैठ गई थी। अनेक कसनी की राहों से गुजरते हुए सुन्दरसाथ की जागनी की। संवत 1722 में दीपबंदर में जयराम कंसारा की आत्मा को जगाया। इधर बिहारी जी का व्यवहार सुइयों की तरह चुभता था। दीपबंदर से नवी पोरबन्दर, पाटन होते हुए कच्छ आए, फिर मढ़ई में सुन्दरसाथ की जागनी करते हुए ठट्ठा नगर पहुँचे। वहाँ पर ठाकुरी बाई तथा जिन्दादास को जगाया। यहीं पर कबीर पंथ के एक आचार्य महात्मा चिन्तामणि की आत्मा जागृति की जो योगबल से श्रेष्ठ था। कबीर जी की एक साखी समझाई। जिसमें अखण्ड परमधाम से खेल में आने की साक्षी थी। इनके शिष्यों समेत सभी को तारतम की दीक्षा दी। यहीं पर सेठ लक्ष्मण दास जी की आत्मा जाग्रति हुई जो लालदास जी के नाम से सर्वश्रेष्ठ मोमिन बने। **"लाल भी आए हो कर खाली हाथ, आखिर तक निबाहे रहे राज के साथ।"** यहाँ से चल कर मसकत बन्दर आए।

यहाँ पर अनेक सुन्दरसाथ की आत्मा जाग्रत की, जिसमें महाव जी भाई खास सुन्दरसाथ हैं। यहीं पर बाईजूराज जी के साथ अनेक सुन्दरसाथ बन्ध में फसे थे उनकी खबर मिली। मसकत बन्दर से अब्बासी बन्दर आए। यहाँ पर भैरो सेठ जी की आत्मा जाग्रति की। भैरो सेठ ने सत्तर हजार रूपये देकर सुन्दरसाथ को जगाया फिर नलिया में आए। धारा भाई मिला और बिहारी जी की हकीकत कही। बिहारी जी के विपरीत विचारों के कारण दोनों स्वरूपों के मार्ग विपरीत हो गए। सूरत में श्रीजी साहिब आते हैं। यहाँ वेदान्त के धुरन्धर आचार्य भीम भट्ट तथा श्याम भट्ट को जाग्रत किया। गोबिन्द जी माणिक भाई को जाग्रत किया। सूरत में भीम भाई और अन्य सुन्दरसाथ ने श्री जी को अपना धामधनी मान कर जुगल स्वरूप की आरती उतारी। सूरत से अहमदाबाद, सिद्धपुर तथा मेड़ता में सुन्दरसाथ को जगाते हुए आगे बढ़े। मेड़ता में राजाराम झांझन भाई को जगाया। यहीं पर मुहम्मद साहिब की शक्ति भी श्रीजी के अन्दर आई। शाहजहाँपुर बुडियो से होते हुए हरिद्वार आए। हरिद्वार से दिल्ली आए। साकुमार (औरंजेब) की आत्मा को जगाने के लिए अनेक प्रयत्न किए। आमेर, उदयपुर, मन्दसौर से उज्जैन आए। औरंगाबाद से आकोट फिर रामनगर होते हुए पन्ना जी में अपने आखिरी मुकाम पर आए।

अन्तःकरण की निर्मलता

निलेश गर्ग, उदयपुर

धनी न जाए किनको धूत्यो,
जो कीजे अनेक धुताए।

तुम चेन ऊपर के कोई करो,
पर छूटे न क्योंए विकार।। कि.प्र.14/1

श्री प्राणनाथ जी ने अपनी वाणी में कहा है कि परमात्मा किसी के बाहरी दिखावे से प्रसन्न नहीं होता। उस सर्वशक्तिमान परमात्मा को कोई भी धोखा नहीं दे सकता है। आप उस सर्वशक्तिमान परमात्मा को छलपूर्वक कार्य करके उसको छलने की कोशिश कर लो पर वो आपके प्रपंच में आने वाले नहीं है चाह आप धर्म के नाम पर अनेक बाह्य आडम्बर करो, **जैसे** दिन में एक या एक से अधिक बार स्नान करो, शरीर के विभिन्न अंगो पर तिलक लगाओं, धर्म के नाम पर विभिन्न प्रकार की वेशभुषाएं धारण करो, व्रत–उपवास, पूजा–पाठ, जप–तप, अनेक बार तीर्थ यात्राऐं करो व अनेक बड़े–बड़े धार्मिक अनुष्ठान सम्पन्न करो ।

उपरोक्त कार्य करने के बाद भी अगर आपका अन्तःकरण निर्मल नही है तो मनोविकार आपका पीछा छोड़ने वाले नहीं है। जब तक आप अपने हृदय से काम, क्रोध, मद, मोह, लोभ, लालच, ईष्या व द्वेष आदि विकारों को अपने हृदय से बाहर नहीं निकालते हो तो आप का अन्तःकरण निर्मल नहीं होगा। अन्तःकरण निर्मल करने का उपाय श्री प्राणनाथ जी ने अपनी वाणी में बताया है–

निसदिन ग्रहिए प्रेम सों,
जुगल स्वरूप के चरण।

निरमल होना याही सों,
और धाम बरनन।। कि.प्र.106/2

हमें दिन–रात राजश्यामा जी के चरणों का चितवन व धाम के 25 पक्षों के प्रेमपूर्वक चितवन द्वारा ही निर्मल हुआ जा सकता है।

आतम धनी पेहेचानिये,
निरमल एही उपाय।

महामत कहे समझ धनी के,
ग्रहिए सों प्रेमे पाए।। कि.प्र.106/16

श्री महामती जी कहती है कि निर्मल होने के लिए हमें अपने आत्मा के प्रियतम, प्राणेश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप अक्षरातीत की पहचान करके उनके चरणों को अपने हृदय में बसाना होगा।

पाक न होइए इन पानिए,
चाहिए अर्स का जल।

न्हाइए हक के जमाल में,
तब होइए निरमल।।सि.प्र.25/44

पाक होना इन जिमिए,
और न कोई उपाए।

लीजे राह रसूल इस्कें,
तब देवें रसूल पोहोंचाए।। सि.प्र.25/45

अन्तःकरण निर्मल करने के लिए चितवन (ध्यान) के द्वारा उस सर्वशक्तिमान सच्चिदानन्द स्वरूप परब्रह्म को अपने हृदय मंदिर में बसाना पड़ेगा। चितवनि के अतिरिक्त कोई दूसरा मार्ग नहीं है, उस परमात्मा को पाने का यह अलौकिक दिव्य मार्ग श्री प्राणनाथ जी ने प्रदान किया है। श्री प्राणनाथ जी के द्वारा बताए गए मार्ग का अनुसरण करने पर ही अखण्ड मुक्ति, प्रेम, सुख व आनंद में विचरण कर सकते है।

प्रेम महत्त्वपूर्ण है

एक बार ईसा मसीह किसी गांव में पहुंचे। वहां किसी दुराचारी व्यक्ति ने मंडली सहित उन्हें भोजन का निमंत्रण दिया। ईसा मसीह ने प्रेमपूर्वक उसका निमंत्रण स्वीकार कर लिया। गांव के सारे लोग दुराचारी व्यक्ति से घृणा करते थे और उससे दूर रहने में ही अपनी भलाई समझते थे। सब लोग आश्चर्यचकित थे कि ईसा ने उस व्यक्ति के घर भोजन करना आखिर स्वीकार कर कैसे लिया। एक बूढ़े व्यक्ति ने तो गांव वालों को सलाह दे डाली कि सब ईसा के पास चलें और उनसे अपने मन की बात साफ-साफ कह दें।

सबको उस बुजुर्ग की सलाह पसंद आई और वे एक साथ ईसा मसीह से मिलने चल दिए। गांव वालों का दल जब उनके पास पहुंचा तो, वे भोजन के लिए जाने की तैयारी कर रहे थे। बुजुर्ग की बात उन्होंने ध्यान से सुनी और फिर मुस्कराकर पूछा-बाबा, आप मुझे एक बात बताएं। चिकित्सक स्वस्थ मनुष्य के घर पर जाता है या किसी रोगी के। मैं भी चिकित्सक बनकर एक रोगी के घर जा रहा हूं। उसे घृणा का विष नहीं, प्रेम की अचूक औषधि चाहिए।

बुरे व्यक्ति को अच्छा बनाना है तो उसके साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करना चाहिए। उसके संपर्क में आओ, तभी वह आपका सम्मान करेगा। उसके अंदर जो दुर्गुण मौजूद हैं, उनसे हमें अवश्य बचना चाहिए, किंतु उससे घृणा करके उसका हृदय कभी नहीं बदला जा सकता। हमें पापी से नहीं पाप से घृणा करनी चाहिए। उसे पाप से मुक्त करने की चेष्टा करनी चाहिए। संसार में कोई भी व्यक्ति निर्विकार नहीं है। एक दूसरे पर दोषारोपण करने से जीवन, समाज और संसार की गति अवरुद्ध हो जाएगी। इसलिए तिरस्त व बहिष्त करने की बजाय किसी को अपनत्व से समझाना व सुधारना ही ठीक है। यह सुनते ही गांव वाले उन्हें नमन कर सिर झुकाए चुपचाप वापस चले गए।

चिन्तन का विषय

शालिनी, श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा

सुन्दरसाथ जी हमे 400 वर्श बीत गये हैं इस झूठे संसार माया के खेल में आए हुए लेकिन चिन्तन व चिन्ता का विशय यह है कि क्या 400 वर्श बीतने के बाद भी हमारी आसक्ति हमारा मोह इस झूठे संसार से छूट पाया।

क्या हम जागृत हो पाए?

क्या तारतम लेने मात्र से हम जागृत हो पाएंगे?

क्या मात्र सुन्दरसाथ की संख्या बढ़ाने से आत्म जागृति होगी?

सिर्फ तारतम ले लेना, वाणी पढ़ना, मेहेर सागर का पाठ करना, सेवा पूजा करना, कण्ठी गले में पहनना ये सब करने से आत्म जागृति होगी?

क्या हमने वो सब पा लिया जिसको पाने के लिए हम दूसरों को प्रेरित कर रहे है?

क्या हमने उस सत्, चित्त, आनन्द स्वरूप श्री राज जी का दीदार कर लिया है?

"नहीं" सुन्दरसाथ जी ये सब तो हम 400 वर्शों से ही करते आ रहे है।

सुन्दरसाथ जी मेरा कहने का भाव यह है कि जब हम खुद जागृत नहीं हुए तो हम किसी दूसरे की जागनी कैसे कर सकते हैं।

स्वयं दीदार नहीं किया तो मैं किसी दूसरे को कैसे कह सकती हूँ कि राज जी हैं और उनका दीदार करो।

कोई अन्धा व्यक्ति किसी दूसरे अन्धे को कैसे रास्ता दिखा सकता है।

क्या सृश्टि के प्रारम्भ से लेकर आज तक कोई ऐसा सन्त, महात्मा, महापुरूश, पीर, पैगम्बर हुआ जिसने खुद परमात्मा को प्राप्त ना किया हो और वो कहे कि मैं आपको परमात्मा से मिला सकता हूँ। जिसने खुद आम का का रस ना चखा हो वो कैसे कह सकता हैं कि आम मीठा है।

एक गूंगा व्यक्ति दूसरे बहरे व्यक्ति को कैसे राह बात सकता है।

सुन्दरसाथ जी दूसरों को बताने से पहले वो सब हमें गृहण करना पड़ेगा।

अपने जीवन में चरितार्थ करना होगा, हमें ऐसा बनना पड़ेगा, तभी हम किसी दूसरे व्यक्ति को इस राह पर चलने की प्रेरणा दे सकते हैं।

जो सेवा करता है, वो कहता है कि क्या होता है ध्यान। सिर्फ ध्यान–ध्यान करने से क्या होगा, सेवा करो जागनी करो।

जो ध्यान करता है वो कहता है कि केवल सेवा–सेवा करने से क्या होगा ध्यान करो ध्यान ही सब कुछ है।

लेकिन सुन्दरसाथ जी जो ये कहते हैं कि सेवा ही सब कुछ है, ध्यान कुछ नहीं है। मैं उन सुन्दरसाथ से पूछना चाहती हूँ कि आपने कितना ध्यान किया, आप किस धरातल पर ये कह रहे हो कि ध्यान कुछ नहीं है।

क्या आपने अपने जीवन के 5–10 वर्श ध्यान में लगाए।

जिससे आपको ये अनुभव हुआ कि ध्यान कुछ नहीं है। और जो ये कहते हैं कि ध्यान ही सब कुछ है। सिर्फ आँख बन्द करके बैठ जाओ और राज जी मिल जाएंगे सुन्दरसाथ जी ऐसे भी राज जी मिलने वाले नहीं हैं।

जब तक हमारे जीवन में प्रेम, श्रद्धा, समर्पण, त्याग, तपस्या, सेवा और ध्यान इन सभी साधनों का सही ढंग से समन्वय नहीं होगा, तब तक, खाली एक सेवा से ध्यान से, प्रेम से, त्याग से, तपस्या से, श्रद्धा से, समर्पण से कुछ नहीं होगा। सुन्दरसाथ जी ये सभी एक दूसरे के पूरक हैं इन सभी साधनों को हमें अपने व्यवहारिक जीवन में लाना होगा।

तब ही हम सही मायनें में ब्रह्मसृष्टि कहलाएंगे और तभी हमारी आत्म जागृति होगी। आत्म जागृति का जो हमारा मिशन है वो पूरा होगा।

श्री शंकराचार्य द्वारा विरचित (भज–गोविन्दम्) से–

नलिनी दलगत जलमति तरलं
तद्वज्जीतिव मति यश चपलम् ।
विद्धि व्याहयभिमानग्रस्तं
लोकं शोकहतं च समस्तम् ।।

कमल की पंखुड़ियों पर क्रिड़ा करते हुए जल–बिन्दु का अस्तित्व जिस तरह अत्यन्त अनिश्चित रहता हैं उसी तरह यह मनुश्य का जीवन भी सर्वथा अस्थिर है। इसे भली–भाँति समझ लो कि यह सारा विश्व ही रोग और अभिमान से ग्रस्त है और कष्ट से आक्रान्त हैं।

प्रेरणादायक प्रसंग

जब भीष्म पितामह मृत्यु शैया पर थे तब युधिष्ठर ने उनकी लम्बी आयु व स्वस्थ जीवन के रहस्य जानने के लिए उपदेश देने की प्रार्थना की तब भीष्म पितामह ने निम्न 12 बिन्दु बताए जो आज भी प्रासंगिक हैं। 1. मन को वश में रखना, 2. घमंड नहीं करना, 3. विषयों की ओर बढ़ती हुई इच्छाओं को रोकना, 4. कटु वचन सुनकर भी उत्तर नहीं देना, 5. मार खाने पर भी शांत व सम रहना, 6. अतिथि व लाचार को आश्रय देना, 7. दूसरों की निन्दा न करना न सुनना, 8. नियमपूर्वक शास्त्र पढ़ना व सुनना, 9. दिन में नहीं सोना, 10. स्वयं आदर न चाहकर दूसरों को आदर देना, 11. क्रोध के वशीभूत नहीं रहना, 12. स्वाद के लिए नहीं स्वास्थ्य के लिए भोजन करना।

1. सत्य धर्म सब धर्मों से उत्तम धर्म है। 'सत्य' ही सनातन धर्म है। तप और योग, सत्य से ही उत्पन्न होते हैं। शेष सब धर्म, सत्य के अंतर्गत ही हैं।

2. सत्य बोलना, सब प्राणियों को एक जैसा समझना, इन्द्रियों को वश में रखना, ईर्ष्या द्वेष से बचे रहना क्षमा, शील, लज्जा, दूसरों को कष्ट न देना, दुष्कर्मों से पृथक रहना, ईश्वर भक्ति, मन की पवित्रता, साहस, विद्या–यह तेरह सत्य धर्म के लक्षण हैं। वेद सत्य का ही उपदेश करते हैं। सहस्रों अश्वमेध यज्ञों के समान सत्य का फल होता है।

3 .सत्य ब्रह्म है, सत्य तप है, सत्य से मनुष्य स्वर्ग को जाता है। झूठ अन्धकार की तरह है। अन्धकार में रहने से मनुष्य नीचे गिरता है। स्वर्ग को प्रकाश और नरक को अन्धकार कहा है।

4. ऐसे वचन बोलो जो, दूसरों को प्यारे लगें। दूसरों को बुरा भला कहना, दूसरों की निन्दा करना, बुरे वचन बोलना, यह सब त्यागने के योग्य हैं। दूसरों का अपमान करना, अहंकार और दम्भ, यह अवगुण हैं।

5. इस लोक में जो सुख कामनाओं को पूरा करने से मिलता है और जो सुख परलोक में मिलता है, वह उस सुख का सोलहवां हिस्सा भी नहीं है जो कामनाओं से मुक्त होने पर मिलता है।

6. जब मनुष्य अपनी वासनाओं को अपने अन्दर खींच लेता है, जैसे कछुआ अपने सब अंग भीतर को खींच लेता है, तो आत्मा की ज्योति और महत्ता दिखाई देती है।

7. मृत्यु और अमृतत्वदोनों मनुष्य के अपने अधीन हैं। मोह का फल मृत्यु और सत्य का फल अमृतत्व है।

8. संसार को बुढ़ापे ने हर ओर से घेरा है। मृत्यु का प्रहार उस पर हो रहा है। दिन जाता है, रात बीतती है। तुम जागते क्यों नहीं?अब भी उठो। समय व्यर्थ न जाने दो। अपने कल्याण के लिए कुछ कर लो। तुम्हारे काम अभी समाप्त नहीं होते कि मृत्यु घसीट ले जाती है।

9. स्वयं अपनी इच्छा से निर्धनता का जीवन स्वीकार करना सुख का हेतु है। यह मनुष्य के लिए कल्याणकारी है। इससे मनुष्य क्लेशों से बच जाता है। इस पथ पर चलने से मनुष्य किसी को अपना शत्रु नहीं बनाता। यह मार्ग कठिन है, परन्तु भले पुरुषों के लिए सुगम है। जिस मनुष्य का जीवन पवित्र है और इसके अतिरिक्त उसकी कोई सम्पत्ति नहीं, उसके समान मुझे दूसरा दिखाई नहीं देता। मैंने तुला के एक पल्ले में ऐसी निर्धनता को रक्खा और दूसरे पल्ले में राज्य को। अकिंचनता का पल्ला भारी निकला। धनवान पुरुष तो सदा भयभीत रहता है, जैसे मृत्यु ने उसे अपने जबड़े में पकड़ रखा है।

10. त्याग के बिना कुछ प्राप्त नहीं होता। त्याग के बिना परम आदर्श की सिद्धि नहीं होती। त्याग के बिना मनुष्य भय से मुक्त नहीं हो सकता। त्याग की सहायता से मनुष्य को हर प्रकार का सुख प्राप्त हो जाता है।

11. वह पुरुष सुखी है, जो मन को साम्यावस्था में रखता है, जो व्यर्थ चिन्ता नहीं करता। जो सत्य बोलता है। जो सांसारिक पदार्थों के मोह में फंसता नहीं, जिसे किसी काम के करने की विशेष चेष्टा नहीं होती।

12. जो मनुष्य व्यर्थ अपने आपको सन्तप्त करता है, वह अपने रूप रंग, अपनी सम्पत्ति, अपने जीवन और अपने धर्म को भी नष्ट कर देता है। जो पुरुष शोक से बचा रहता है, उसे सुख और आरोग्यता, दोनों प्राप्त हो जाते हैं।

13 .सुख दो प्रकार के मनुष्यों को मिलता है। उनको जो सबसे अधिक मूर्ख हैं, दूसरे उनको जिन्होंने बुद्धि के प्रकाश में तत्व को देख लिया है। जो लोग बीच में लटक रहे हैं, वे दुखी रहते हैं।

14. श्रेष्ठ और सज्जन पुरुष का चिह्न यह है कि वह दूसरों को धनवान देख कर जलता नहीं।

वह विद्वानों का सत्कार करता है और धर्म के सम्बन्ध में प्रत्येक स्थान से उपदेश सुनता है।

15. जो पुरुष अपने भविष्य पर अधिकार रखता है (अपना पथ आप निश्चित करता है, दूसरों की कठपुतली नहीं बनता) जो समयानुकूल तुरन्त विचार कर सकता है और उस पर आचरण करता है, वह पुरुष सुख को प्राप्त करता है। आलस्य मनुष्य का नाश कर देता है।

16. भोजन अकेले न खाये। धन कमाने का विचार करे तो किसी को साथ मिला ले। यात्रा भी अकेला न करे। जहां सब सोये हुए हों, वहां अकेला जागरण न करे।

17. जो पुरुष अपने आपको वश में करना चाहता है उसे लोभ और मोह से मुक्त होना चाहिए।

18. दम के समान कोई धर्म नहीं सुना गया है। दम क्या है?क्षमा, धृति, वैर–त्याग, समता, सत्य, सरलता, इन्द्रिय संयम, कर्म करने में उद्यत रहना, कोमल स्वभाव, लज्जा, बलवान चरित्र, प्रसन्नचित्त रहना, सन्तोष, मीठे वचन बोलना, किसी को दुख न देना, ईर्ष्या न करना, यह सब दम में सम्मिलित हैं।

19. कामनाओं को त्याग देना उन्हें पूरा करने से श्रेष्ठ है। आज तक किस मनुष्य ने अपनी सब कामनाओं को पूरा किया है?इन कामनाओं से बाहर जाओ। पदार्थ के मोह को छोड़ दो। शान्त चित्त हो जाओ।

सुभाषितम्

शास्त्र उपदेश करते हैं राग में नहीं अनुराग में जीवन जीना चाहिए। किसी के प्रति राग उत्पन्न होता है तो वासना जन्म लेती है और किसी के प्रति अनुराग उत्पन्न होता है तो उपासना जन्म लेती है। पौराणिक उदाहरण– सूर्पनखा भी प्रभु को पाना चाहती है और शबरी भी। एक राग से प्रभु को पाना चाहती है और एक अनुराग से।

सूर्पनखा राग और शबरी अनुराग है। रागी को प्रभु तक जाना पड़ता है और अनुरागी तक प्रभु स्वयं जाते हैं। जब भी, जहाँ भी और जिसके भी प्रति राग होगा, तब, तहाँ और उसे मन भोगना चाहेगा। राग भोग को जन्म देता है और अनुराग योग को।

परमात्मा मेरे हैं ये अनुराग और परमात्मा मेरे लिए हैं यही राग है। ऐसे ही दुनियाँ की प्रत्येक वस्तु को अपना समझना अनुराग और अपने लिए समझना ही राग है।

परमधाम की ब्रह्मसृष्टि की पहचान

रामेश्वर निजानन्दी

अब सुनियो ब्रह्मसृष्टि विचार
जो कोई निज वतनी सिरदार।
अपनो धनी श्री श्यामा श्याम
अपना वासा है निजधाम। ।

परमधाम में रहने वाले सुन्दरसाथ जी ! हम सभी परमधाम के वासी हैं तथा हमारे प्रियतम युगल स्वरूप श्री राज श्यामा जी हैं! श्री महामति जी इस प्रकाश हिन्दुस्तानी की चौपाइयों के माध्यम से सभी सुन्दरसाथ को प्रबोधित कर रही हैं कि हे सुन्दरसाथ जी तुम इस माया के वासी नहीं हो तुम तो अखण्ड परमधाम के वासी हो किन्तु तुम माया का तन लेकर माया में इस प्रकार से मिल गई हो जिस प्रकार नमक का ढेला सागर में जाकर मिल जाता है तुमको इतना भी फरक नहीं है कि तुम धाम धनी की अगंना हो और तुम्हारा प्रियतम अक्षरातीत है संसार के सगे संबंधी अच्छे लगते हैं संसार अखण्ड लगता है जिस प्रकार जयराम कंसारा को श्री जी ने खंडनी करके जगाया और उसकी की आत्मा जागृत हो गयी और मिहिरराज जी के तन के अन्दर अक्षरातीत का दर्शन किया श्री जी के समय जो भी सुन्दरसाथ श्री जी के मुखारबिन्द से चर्चा सुनता उसकी आत्मा जागृत हो जाती और संसार को नश्वर मानकर छोड़ देते क्योंकि वह परमधाम की सभी ब्रह्मसृष्टि थी किन्तु प्रणामी निजानन्दी समाज 40 लाख का सुन्दरसाथ है श्री जी के समय से लेकर आज तक उस गति से जागनी नहीं हुई क्योंकि सुन्दरसाथ को वाणी से कोसों दूर रखा गया केवल सेवा पूजा तारतम की चौपाईयों का मौन जाप करना पाठ करना थोड़ा सा वाणी पर चर्चा कर देना इससे सुन्दरसाथ की जागनी नहीं हो सकती सुन्दरसाथ को वाणी के सभी भेद हृदय में उतरना तब जाकर हम जाग सकते हैं और अपने को परमधाम की ब्रह्मसृष्टि कह सकते हैं आज प्रणामी समाज में बड़े बड़े कार्यक्रम होते हैं उसमें पैसों को पानी की तरह बहाया जाता है नाच–गान उछल–कूद करना बस यहां तक सीमित रह गये अगर सभी को वाणी का वास्तविक ज्ञान हो जाए तो सभी की आत्मा जागृत हो जाएगी सभी साथ में सभी को चितवनि करना करवाना तब हम अपने को ब्रह्मसृष्टि कह सकते हैं प्रियतम अक्षरातीत की भाोभा श्रृंगार में अपनी आत्मा को डुबो देना ही ब्रह्मसृष्टियों की पहचान है जो जीव सृष्टि होगी वह तारतम का खाली मौन जप कर अपने जीवन को लगा देगी किन्तु–जो ईश्वरी सृष्टि होगी वाणी के ज्ञान को लेकर अक्षरब्रह्म तक सीमित रहेगी किन्तु ब्रह्मसृष्टि इस मायावी जगत में बैठे बैठे परमधाम के युगल स्वरूप के नख से सिख तक की शोभा में डूबकर अपने प्रियतम अक्षरातीत को संसार में जाहेर कर देगी।

सोई सोहागिन धाम में, जो करसी इत रोसन।
तोल मोल दिल माफक, देसी सुख सबन। ।

परमधाम की ब्रह्मसृष्टि अपने धनी को जाहेर करके सभी संसार के जीवों को अखण्ड मुक्ति ब्रह्मज्ञान द्वारा सबको मुक्ति की प्राप्ति होगी।

सदस्यता फार्म

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित **''तारतम मंजरी''** हिन्दी मासिक पत्रिका के सदस्य बनें।

कार्यालय– श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, नकुड़ रोड़, सरसावा

जिला– सहारनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत 247232

मोबाईल न.– 7088120381 (कार्यालय) 8650851010,9725389547,9314193262

email- tartammanjari@gmail.com shri, prannathgyanpeeth@gmail.com

महोदय,

मैं ''तारतम मंजरी'' का वार्षिक/आजीवन शुल्क रु. ..... नकद/ मनी ऑडर/ बैंक ड्राफ्ट/ पे – इन – स्लिप ..... दिनांक .....

अंतर्गत अदा कर रहा हूँ।

अतः मुझे हर माह तारतम मंजरी निम्न पते पर भेजें।

नाम ..... पिता/पति का नाम .....

पता .....

..... राज्य ..... पिनकोड़ .....

फोन ..... व्हाट्सएप न. ..... e-mail .....

(विशेष नियम)

(1) सदस्यता शुल्कः वार्शिक 130/–, आजीवन 1200/–

(2) ड्रफ्ट ''तारतम मंजरी'' के नाम सरसावा, सहारनपुर में देय होना चाहिये।

(3) कृपया अपना नाम व पूरा पता स्पश्ट रूप से भरें।

(4) सदस्यता शुल्क ''साहित्य खाता'' (श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, ट्रस्ट) के खाता संख्या 1335000100118751@IFS CODE- PUNB0133500 (पंजाब नेशनल बैंक, सलेम्पुर(सहारनपुर)उ.प्र. में जमा करा सकते हैं।

सम्पादक

निर्माणाधीन गौशाला

प्राणाधार सुन्दरसाथ जी! सादर प्रणाम जी! श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला की गौवों के दूध का वितरण सभी ज्ञानपीठवासियों, विद्यार्थियों, आचार्यों एवं आगुन्तक अतिथियों में निशुल्क किया जाता है। आप सभी सुन्दरसाथ एवं उदारमना दानदाताओं से श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा का निवेदन है कि गौवों को उत्तम चारा मिले, रहने के लिए उत्तम व्यवस्था हो, उसके लिए आधुनिक ढ़ंग से गौशाला का निर्माण कार्य होने जा रहा है, इसके लिए जो भी सज्जन एवं सुन्दरसाथ दान देना चाहें ज्ञानपीठ उनका स्वागत करता है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं, और आप आने में असमर्थ हैं तो कृपया ज्ञानपीठ के खाते पर राशि जमा करके सूचित कर सकते हैं। हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि आपके द्वारा दिया गया दान गौवों के संवर्धन में ही लगाया जायेगा। धन्यवाद।

विनम्र निवेदन

धाम धनी के लाडले सुन्दरसाथ जी! वर्तमान समय में श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ सरसावा में शिक्षण, साहित्यिक एवं निर्माण कार्य तेजी से चल रहा है। जिन सुन्दरसाथ ने इन कार्यों के लिए अपनी सेवाएं लिखवायी है या स्वतः उनके मन में सेवा करने की इच्छा है, कृपया वे इन खातों में धनराशि भेजने का कष्ट करें। इस बात का ध्यान रखा जाय कि जिस सेवा की धनराशि भेजी जा रही है, मात्र उसी खाते की C.B.S.A/C संख्या में भेजें।

प्रणाम जी

सेण्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया

1. खाता धारक का नाम–श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ ट्रष्ट
   खाता संख्या–3290805513
2. खाता धारक का नाम–श्री ज्ञानपीठ प्रकाशन
   खाता संख्या– 3290804553

पता–शाखा–सरसावा, सहारनपुर उ. प्र. 247232

MICR-Code - 247016005

IFSC CODE-CBIN0282531

सामान्य खाता संख्या
1335000100111916
पंजाब नेशनल बैंक
सलेमपुर (सहारनपुर) उ.प्र.
RTGS/NEFT IFS
CODE - PUNB0133500

साहित्य खाता संख्या
1335000100118751
पंजाब नेशनल बैंक
सलेमपुर (सहारनपुर) उ.प्र.
RTGS/NEFT IFS
CODE - PUNB0133500

भवन निमार्ण खाता संख्या
34971188767
भारतीय स्टैट बैंक
(11439) सरसावा, सहारनपुर
उत्तरप्रदेश, पिन- 247232
IFS CODE- SBIN0011439

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा से प्रकाशित साहित्यों की सूची

क्र. स.	ग्रन्थ का नाम	मूल्य	क्र. स.	ग्रन्थ का नाम	मूल्य
1.	श्री कुलजम स्वरूप (मूल)	700.00	36.	बोध मंजरी (नेपाली)	15.00
2.	श्री बीतक साहेब टीका	400.00	37.	बोध मंजरी (उड़िया)	15.00
3.	श्री रास टीका	150.00	38.	शाश्वत सत्य की ओर	15.00
4.	श्री प्रकाश टीका	300.00	39.	सत्य को बाटो (नेपाली)	15.00
5.	श्री कलश टीका	225.00	40.	संसार से परमधाम की ओर	20.00
6.	श्री खटरूती टीका	80.00	41.	श्री प्राणनाथ महिमा	20.00
7.	श्री किरन्तन टीका (हिन्दी)	300.00	42.	श्री ब्रह्मवाणी चर्चा	65.00
8.	श्री किरन्तन टीका (अंग्रेजी)	350.00	43.	निजानन्द संस्कार पद्धति	15.00
9.	श्री किरन्तन टीका (नेपाली)	300.00	44.	सेवा पूजा	30.00
10.	श्री खुलासा टीका	250.00	45.	मूल स्वरूप की ओर	80.00
11.	श्री सनंध टीका (अप्रकाशित)		46.	चितवनी	5.00
12.	श्री खिलवत टीका	180.00	47.	आर्ष ज्योति	120.00
13.	श्री परिक्रमा टीका	275.00	48.	तारतम के निर्झर	70.00
14.	श्री सागर टीका	170.00	49.	तारतम पीयूषम्	70.00
15.	श्री सिनगार टीका	300.00	50.	हमारी शाश्वत सम्पदा	60.00
16.	श्री सिन्धी टीका	150.00	51.	खाद्य परिशीलन	250.00
17.	श्री मारफत सागर टीका (अप्रकाशित)		52.	विनाश का प्रर्याय मांसाहार	60.00
18.	श्री क्यामत नामा टीका (अप्रकाशित)		53.	विराट नक्शा (केलेण्डर रूप में)	50.00
19.	श्री मुखवाणी संगीत	150.00	54.	सौवं क्यामतनामा	90.00
20.	विद्वददमनी	200.00	55.	अनमोल मोती	5.00
21.	पट दर्शन	200.00	56.	सागर के मोती	10.00
22.	धाम सुषमा	60.00	57.	नित्य पाठ	5.00
23.	जागो और जगाओ	100.00	58.	ये स्वर्णिम पल	10.00
24.	दोपहर का सूरज	60.00	59.	मुख्तार हिन्द	20.00
25.	प्रेम का चाँद	65.00	60.	शब–ए–मेयराज	15.00
26.	निजानन्द योग	60.00	61.	अफलातूनी इलम	20.00
27.	हमारी रहनी	50.00	62.	बुलन्द मुकदमा	40.00
28.	ब्रह्माण्ड रहस्य	40.00	63.	झूठ ही झूठ	60.00
29.	श्री मद्भागवत यथार्थम्	30.00	64.	यथार्थ दीपिका	30.00
30.	ध्यान की पुष्पांजली	70.00	65.	प्रश्नमाला	5.00
31.	कड़वे सच	50.00	66.	निजानन्द चित्रकथा	30.00
32.	तमस के पार (बड़ी)	40.00	67.	शेख जी मीर जी का बयान	20.00
33.	तमस के पार (छोटी)	20.00	68.	फरमान	30.00
34.	तमस के पार (पंजाबी)	40.00	69.	स्वास्थ्य के प्रहरी	30.00
35.	बोध मंजरी (हिन्दी)	15.00	70.	सत्यांजलि	40.00

सुभाषित वचन

- हम धर्म *को* मानते हैं पर धर्म *की* नहीं मानते ।
- भक्ति के बिना ज्ञान अंहकार को जन्म देता है जबकि ज्ञान का बिना भक्ति अंधविश्वास को जन्म देती है।
- सत्य सदैव तीन चरणों से गुजरता है - उपहास, विरोध और अन्ततः स्वीकृति।
- मन के अनुकूल हो तो धनी की कृपा और मन के विपरित हो तो धनी की इच्छा, इस तथ्य को यदि जीवन में स्वीकार करेंगे तो आनन्द ही आनन्द है।
- हमारी नीयत से ईश्वर प्रसन्न होते हैं, और दिखावे से इंसान ... यह हम पर निर्भर करता है कि, हम किसे प्रसन्न करना चाहते हैं।
- प्रकृति ने हमारे शरीर की रचना कुछ इस प्रकार की है कि ना तो हम अपनी पीठ थपथपा सकते हैं, और ना ही स्वयं को लात मार सकते हैं । इसलिए हमारे जीवन में मित्र और आलोचक होना जरुरी है ।।

BOOK POST

RNI:UPHIN/2016/46009
RNP/SHN/18-2019-21

प्रकाशक
पू.श्री राजन स्वामी जी

प्रकाशन कार्यालय
श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा, नकुड़ रोड, जिला–सहारनपुर (उ.प्र.)
पिन कोड–247232

सम्पादक
श्री एस. पी. आर्य
भूतपूर्व आई. ए. एस.

तारतम मंजरी पत्रिका के स्वामी
श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ ट्रस्ट, सरसावा
जिला–सहारनपुर, दूरभाष–8650851010
अवतरित न होने पर कृपया इस पते पर लौटाये।
धन्यवाद

सेवा में,